चील अनेक प्रकार की होती है। ये उड़ती तो आकाश में है, पर इनकी पैनी नज़र भोजन की तलाश में ज़मीन पर लगी रहती है। छोटे-मोटे जानवर जिनमें सांप भी शामिल हैं, इनका मुख्य भोजन है। एक **बाइल्ड चील** (टकली चील) बड़ी मछली को पंजों में दबाकर बैठी है (बांए)।

रात को निकलने वाला शिकारी पक्षी **उल्लू** अपने शिकार चूहे को चोंच में द उड़ा जा रहा है (ऊपर-दाए)।

कौन, क्या, कैसे, खाता है?

विशेष लेख पृष्ठ 10 पर

(इस लेख में आए चित्र टाइम/लाइफ के सौजन्य से)

फूलों *के पराग की रसिया* ***हमिंगबर्ड*** *(गुनगुनाने वाली चिड़िया)। रस इसे तुरत ऊर्जा देता है। रस के अलावा फूलों पर मिलने वाली मकड़ी भी इसका भोजन बन जाती है। एक दिन में कोई दो हज़ार फूलों का पराग खाती है (बांए-नीचे)।*

आस्ट्रेलिया का कोआला*। काम, कुंभकरण की भांति सोना और जागने पर नीलगिरी पत्ते खाना। भोजन भी यही और पानी भी पत्तियों से ही मिल जाता है। एक कोआला अपने पूरे [illegible] मे लगभग सौ नीलगिरी पेड़ों के पत्ते खा जाता है (दांए)*

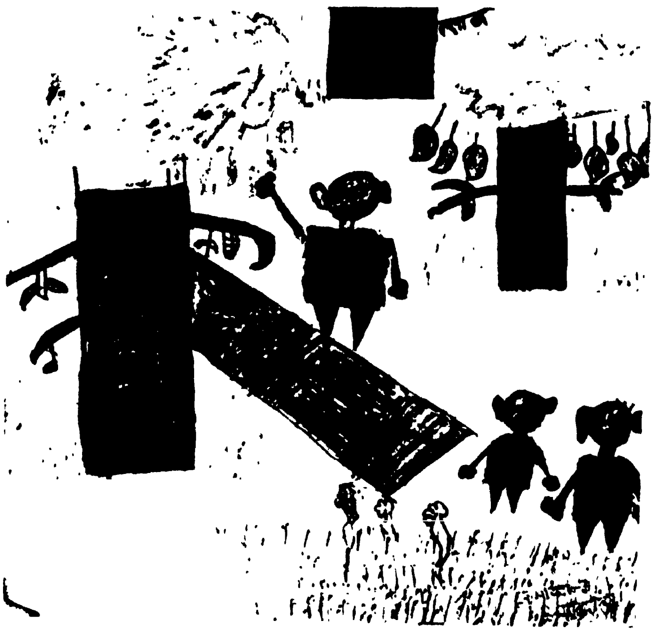

प्रभाकांत भारद्वाज

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-7 अंक-1 जुलाई, 1991

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

कला

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा

एक प्रति: *चार रुपए*

छमाही : *बीस रुपए*

वार्षिक : *चालीस रुपए*

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन : *563380*

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।

सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में

विशेष

10 ☐ कौन, क्या, कैसे, खाता है?

कविता

20 ☐ दांत का पाठ

नाटक

26 ☐ नजानू बना चित्रकार!

हर बार की तरह

2 ☐ बातचीत

4 ☐ मेरा पन्ना

9 ☐ तुम भी बनाओ

18 ☐ दुनिया पक्षियों की-27

19 ☐ दर्पण के संग खेलो

23 ☐ अपनी प्रयोगशाला

25 ☐ खेल कागज़ का

32 ☐ माथा पच्ची

34 ☐ क्यों... क्यों

36 ☐ चित्रकला के आसपास-6

आवरण : एक इल्ली अपना भोजन 'चरती' हुई

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

बातचीत

चित्र : विवेक

'शादी के समय लड़की की उम्र कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए।' यह बात तुमने कई जगह सुनी होगी। फिर यह भी देखा होगा कि तुम्हारी किसी सहेली, दोस्त, बहन या परिचित की शादी हो रही है और उसकी उम्र 18 साल से कम है। अभी मई में अक्षय तृतीया पर ढेरों शादियां ऐसी हुईं जिनमें छोटी उम्र के दूल्हा-दूल्हन थे। अब ये तो हर साल होती हैं। ऐसी ही एक शादी के बारे में भोपाल की दिव्या अग्रवाल ने हमें एक पत्र भेजा है, जिसे हम ज्यों का त्यों छाप रहे हैं—

मैं आपको अपनी एक आपबीती और सच्ची घटना लिख रही हूं। मैं और मेरी सहेली मोनिका कक्षा दसवीं की परीक्षा देने के बाद आगे की पढ़ाई और विषय चुनने के बारे में सोच रहे थे कि हमें ख़बर मिली कि हमारी कक्षा की ही एक छात्रा का विवाह होने वाला है। हम लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। हमने तुरंत उस लड़की से बात करने की कोशिश की, परंतु उसके माता-पिता ने उससे मिलने ही नहीं दिया। जिस दिन ख़बर मिली, उसी दिन शाम को शादी थी। हमने सोचा शादी किसी भी तरह रुकवानी चाहिए, क्योंकि वह लड़की अभी केवल 15 साल की है। मोनिका और मैंने उसके माता-पिता को समझाना चाहा, परंतु उन्होंने तो हमें पहचानने से ही इंकार कर दिया।

फिर हमने अपने माता-पिता को बताए बिना पुलिस को फ़ोन लगाया और सारी बात बताई, तो वहां से हमें जवाब मिला, जो अक्षरशः यह है—'शादी हो रही है, तो होने दो। हमें इससे क्या? आपको करनी है, तो आप भी कर लो।' फिर हमने दूसरे थाने में सारी बात बताई तो उन्होंने कहा, 'एक दूसरी जगह गड़बड़ हो गई है। हमें वहां जाना है। हमें माफ करें।'

पुलिस से निराश होने के बाद हम लोगों ने सोचा, ' अब क्या करें।' हमने डरते-डरते अख़बार वालों को फोन लगाया और उन्हें शादी की बात व पुलिस के व्यवहार की बात बताई। उन्होंने भी 'देखेंगे' कहकर टाल दिया।

अब हम दोनों हर तरह से लाचार हो गए। शाम को उस लड़की की शादी हो गई और रात को बिदाई भी।

हमारे भाई-बहनों ने और बाकी सहेलियों ने हम दोनों की खिल्ली उड़ाई और कहा कि, 'देख लिया परिणाम। इतनी दौड़-धूप करने का क्या फल निकला।'

अब हमें विश्वास हो गया है कि जितने भी नियम कानून बनाए जाते हैं। वे सब मोटी किताबों के पन्नों में बंद रखने के लिए होते हैं। उन सबका कोई फ़ायदा नहीं है। पुलिस, प्रशासन और प्रगतिशील कहलाने वाले अख़बार सब झूठे हैं, फ़्रॉड हैं। यह सब आपको लिखने का मेरा उद्देश्य सिर्फ सच्चाई बताना है। (संपादक जी के लिए : चकमक खुली विचारधाराओं वाली रूढ़िविरोधी और प्रगतिशील पत्रिका है। आशा है आप तो पुलिस और अख़बार जैसी निष्क्रियता नहीं दिखाएंगे और यह लेख चकमक में ज़रूर छापेंगे। ताकि लोगों को कुछ शिक्षा मिले। जिस प्रकार मैंने उस लड़की (जिसकी शादी हुई) का नाम नहीं दिया, उसी प्रकार आप चाहें तो अख़बार व थाने का नाम न छापें। धन्यवाद।)

☐ **दिव्या अग्रवाल, पंद्रह वर्ष,**
शिवाजी नगर, भोपाल

भारत शासन ने एक कानून बनाया है जिसके अनुसार 18 साल से कम आयु में विवाह को दंडनीय अपराध माना गया है। लेकिन इसमें खामियां भी हैं। और इन खामियों की वजह से यह कानून होने न होने के बराबर है। इस कानून के अनुसार यदि कोई पुलिस को यह रपट लिखवाता है कि 18 साल से कम आयु

की किसी लड़की का विवाह हो रहा है तो पुलिस हस्तक्षेप कर विवाह रुकवा सकती है। अब यह जग ज़ाहिर है कि हम पुलिस के नाम से कितना डरते हैं और जहां तक बन सके, उससे दूर रहने का ही प्रयत्न करते हैं। लेकिन जैसा कि दिव्या के पत्र से ज़ाहिर है, इस डर के बावजूद पुलिस को ख़बर करने पर भी कुछ नहीं हो पाया।

वास्तव में शादी का संबंध अपने वंश को बढ़ाने से भी है। यही पहलू लड़की की शादी के समय की उम्र से जुड़ा है। 18 साल से कम उम्र में बच्चे होने से लड़की के शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ सकते हैं, साथ ही बच्चे भी कमज़ोर हो सकते हैं। इसीलिए 18 साल की उम्र ही शादी के लिए उपयुक्त मानी गई है।

वैसे भी हमारे समाज में लड़की के साथ दोयम दर्ज़े का व्यवहार होता है। मां-बाप इसी फ़िक्र में लगे रहते हैं कि जल्दी से जल्दी लड़की की शादी हो जाए। उसकी पढ़ाई-लिखाई पूरी हो कि न हो, वह भी कुछ कर सकती है, बन सकती है—लड़के की तरह। यह कोई नहीं सोचता। बस किसी तरह शादी करवाके, भले ही उम्र कम हो, उसे बच्चे जनने की मशीन बनाकर, ज़िंदगी भर के लिए चूल्हा-चक्की में पिसने के लिए छोड़ दिया जाता है।

पीढ़ियों से चले आ रहे इस ढर्रे के ख़िलाफ़ बोलने और कानूनी कार्यवाही करवाने के लिए दिव्या व मोनिका का प्रयास सराहनीय है। दोनों को बधाई!

☐ चकमक

कन्या भी है पुत्र समान देना प्यार दुलार।
स्वस्थ सुखी सुजान बने चमके घर परिवार॥

चिड़िया का घोंसला

कुछ दिन पुरानी बात है। हमारे बरामदे में एक छोटी-सी चिड़िया घोंसला बना रही थी। वह हर रोज एक-एक तिनका लाकर अपना घोंसला बनाती थी। एक सप्ताह में वह घोंसला बन गया। तब चिड़िया ने उस घोंसले में अंडे दिए। कुछ दिनों के बाद चिड़िया ने अंडे फोड़कर बच्चे निकाले। चिड़िया अपने बच्चों को छोड़कर कभी दूर नहीं जाती थी।

हमारे पड़ोस में एक लड़की रहती थी। उसका एक भाई भी था। वे दोनों बहुत शरारती थे। जब उस लड़की को पता चला कि उस घोंसले में बच्चे हैं तो उससे रहा नहीं गया। वह भागी-भागी आई और उस घोंसले में बच्चा देखा। बच्चा बहुत प्यारा था। उसने जैसे ही उस घोंसले में से बच्चा निकालना चाहा, घोंसला टूटकर नीचे गिर गया। तभी

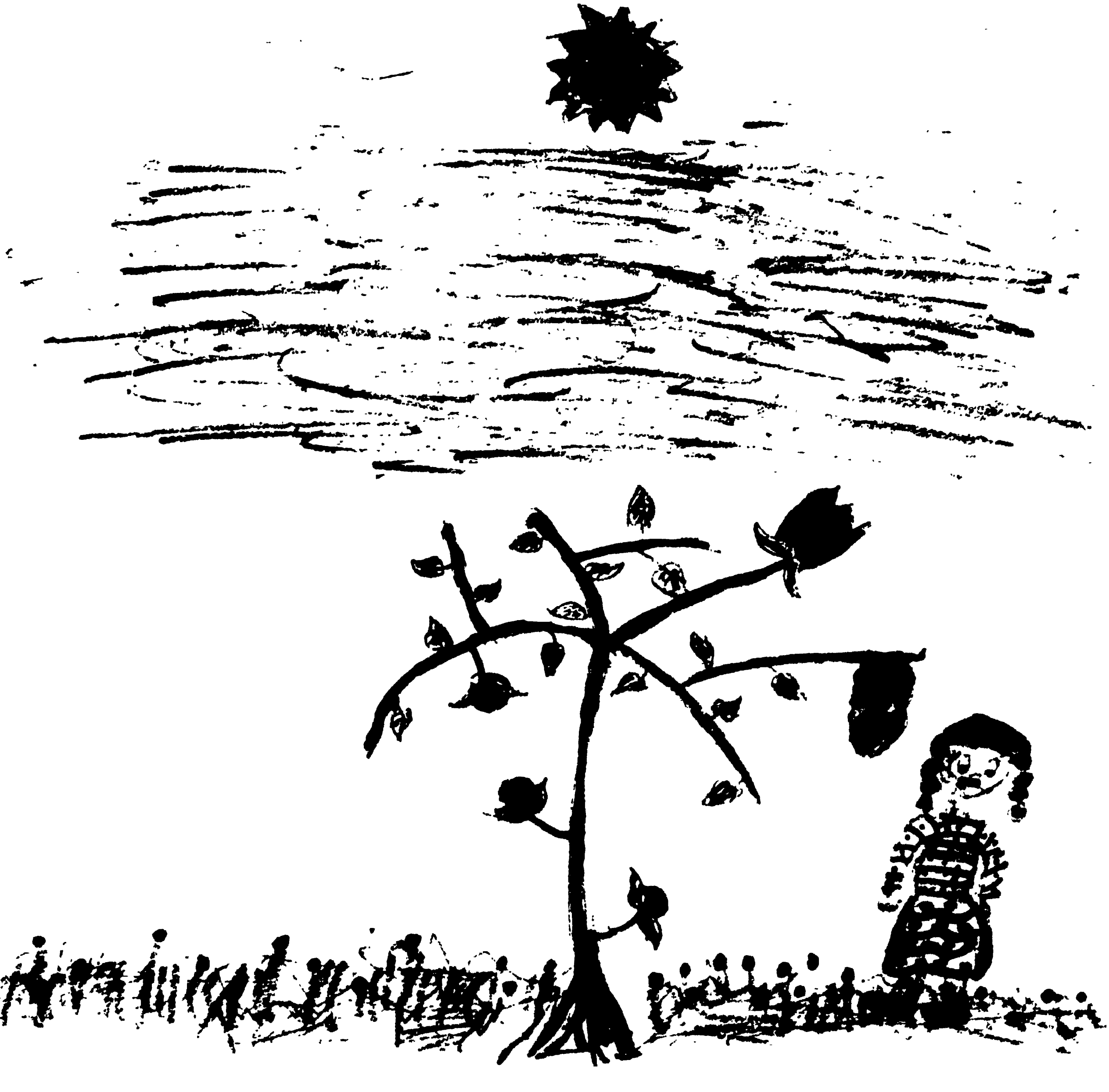

मैं दरवाज़े से बाहर आ रहा था। मैंने उसे देख लिया। मुझे उस लड़की पर बहुत गुस्सा आया। जैसे ही उसने मुझे देखा, वह वहां से भाग गई। तभी वहां पर चिड़िया आ गई और घोंसले के पास ही इधर-उधर उड़ने लगी।

मैंने अपनी मम्मी से एक धागा लिया और अपने भइया से घोंसले को एक पेड़ की टहनी से बंधवा दिया। पर गिरने से चिड़िया के बच्चे को चोट आ गई थी। उसने कुछ दिन तो सहन किया, फिर मर गया।

बेचारी चिड़िया अपने बच्चे के ग़म में बहुत दुखी है। मुझे भी उस बच्चे के मरने का दुख है। अब जब भी मैं उस घोंसले की ओर देखता हूं, तो चिड़िया अपने घोंसले के इधर-उधर घूमती दिखती हैं। उसकी चूं-चूं की दर्द भरी आवाज़ सुनकर मेरा दिल भर आता है।

चित्र एवं कहानी □ विवेक गर्ग, तीसरी, पटियाला

रंगीन चिड़ी

दीपेन्द्रसिंह सिकरवार, छठवीं, शाजापुर

हमारे घर के पिछवाड़े में एक पीपल का पेड़ है। मैं उसकी छाया में बैठा पढ़ रहा था। अचानक एक चिड़ी ने मेरे ऊपर बीट कर दी। मेरे को बहुत क्रोध आया, लेकिन करता क्या? अचानक एक बात मेरे दिमाग में आई। एक पराती लेकर उसे एक लकड़ी की सहायता से खड़ा किया। लकड़ी को एक रस्सी से बांध दिया। पराती के नीचे और आस-पास चुग्गा डाल दिया। रस्सी को पकड़कर पेड़ की ओट में छिप गया।

बहुत से पक्षी वहां चुग्गा चुगने आ गए। एक चिड़ी पराती की छाया में पराती के नीचे चुग्गा चुगने लगी। मैंने रस्सी को खींचा। चिड़ी पराती के नीचे दब गई। चिड़ी को पकड़कर उसे अनेक रंगों से रंगकर और एक काग़ज़ में मेरा पता लिख कर चिड़ी के गले में बांध दिया।

काग़ज़ तो टूट कर गिर गया, लेकिन वह चिड़ी अब भी हमारे घर के आसपास ही रहती है। वह चिड़ियों के बीच में बैठी हुई ऐसी लगती है मानो सब पर हुक्म चला रही हो। सब उसे रंगीन चिड़ी कहते हैं।

□ धन्ना लाल बैरवा, मंडोर, जयपुर

पेंसिल बाक्स बनाया

एक बार की बात है। मैंने कागज़ का एक पेंसिल बाक्स बनाया। उस समय मेरी परीक्षा चल रही थी। मैं उस पेंसिल बाक्स को स्कूल ले गया। रास्ते में पेंसिल बाक्स नीचे से खुल गया और सारा सामान गिर गया, मुझे पता ही नहीं चला। जब मैं स्कूल पहुंचा और अपना बाक्स देखा तो उसमें कुछ नहीं था। फिर मैं ख़ूब रोया। मैंने अपने दोस्त से पेंसिल लेकर परीक्षा दी।

□ अनिमेष, दूसरी, भोपाल

निधि लोढ़ा, चौथी, कलकत्ता

फूल

एक बार मीनू फूल लेने जा रही थी। उसके घर में पूजा थी। तभी रास्ते में पेड़ पर चिड़ियों का चहचहाना सुनकर रूक गई और उस पेड़ के नीचे बैठ गई। उसे वहां बैठना अच्छा लग रहा था।

वह बहुत देर तक वहां बैठी रही। तभी उसे फूल की बात याद आई। वह जल्दी-जल्दी फूल तोड़कर घर पहुंची। घर पहुंचने पर उसने देखा कि पूजा समाप्त हो चुकी है।

□ सत्य प्रकाश सिंह, दूसरी
आरंग, रायपुर

झूला

गकेश सिन्हा, छठवीं

हमारे घर एक आम का बगीचा है। उसमें बहुत से आम के वृक्ष हैं। एक दिन मैंने अपने पिताजी से कहा कि मुझे बगीचे में झूला डाल दो। पिताजा ने झूला डालने को मना कर दिया। तब मैं खूब रोया, तो मेरे पिताजी ने कहा कि रोओ मत हम तुम्हें झूला डाल देते हैं। उन्होंने झूला डाल दिया। तब हम खूब खुश हुए।

□ सत्येन्द्र रघुवंशी, पांचवीं,
पढ़रिया खुर्द,हरदा

मेरा पन्ना

बबलू, आठवीं,
मानकुंड, देवास

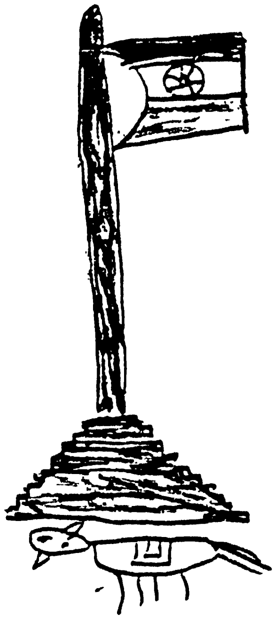

समीर अहमद, सात वर्ष, सिवनी मालवा

पिंकी सरोया, आठवीं, किशनपुरा, उज्जैन

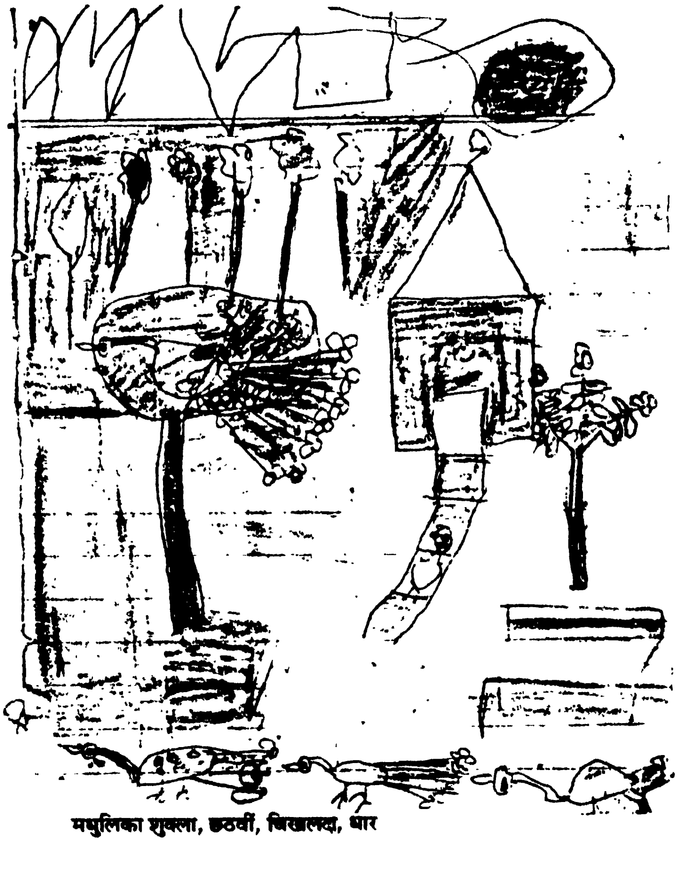

मधुलिका शुक्ला, छठवीं, बिखलदा, धार

सोनालिका कसारे,

तुम भी बनाओ

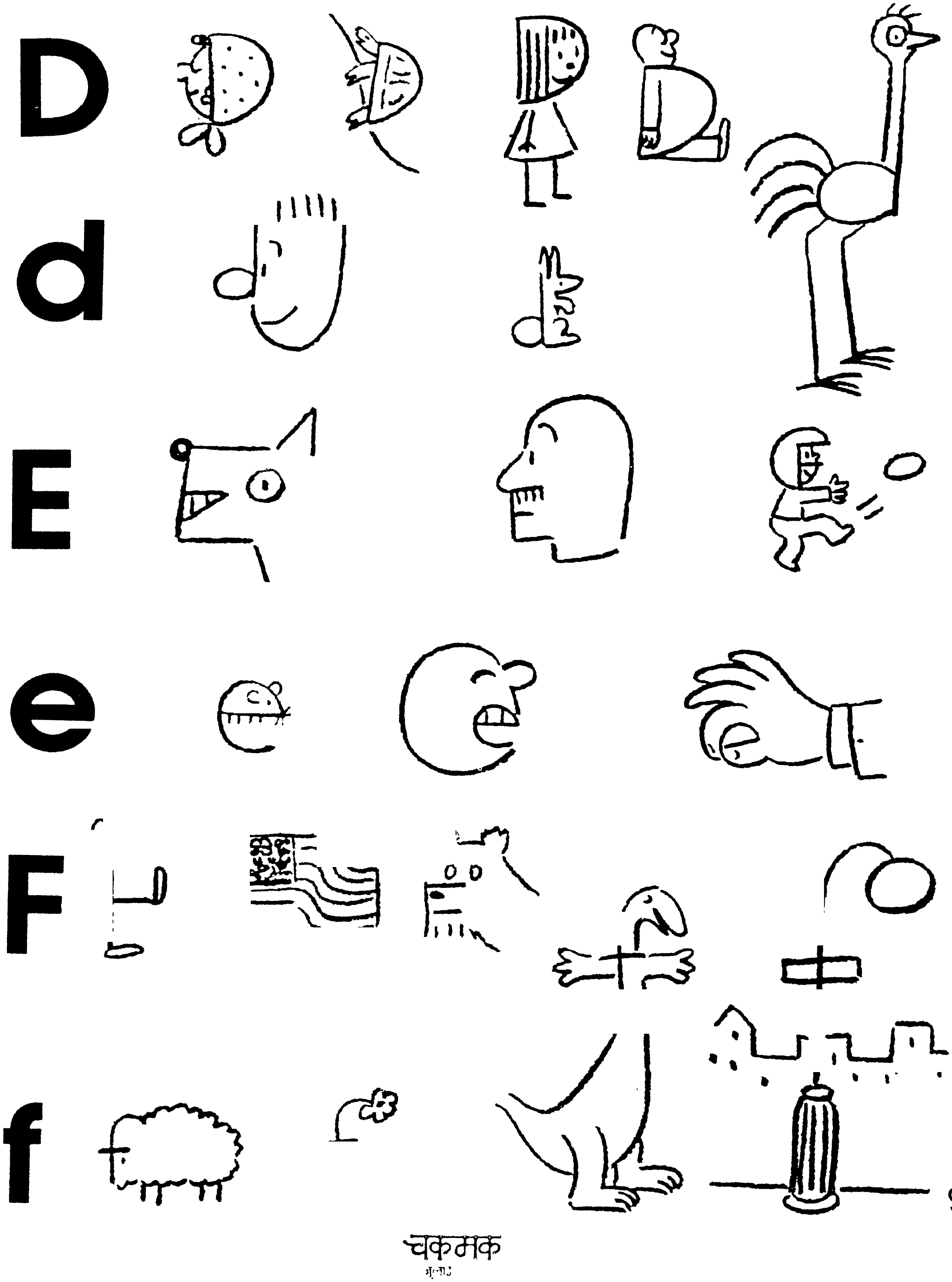

कौन, क्या, कैसे, खाता है?

गर्मा-गर्म जलेबी, पोहे और समोसे। ठंडी लस्सी, आइसक्रीम, शरबत। छौंक लगी दाल, असली घी चुपड़ी रोटी और गरम मसाले की ख़ुशबू उड़ाती सब्ज़ी.......।

वाह!... क्या मज़ेदार खाना है! तुम्हारे मुंह में भी पानी भर आया न!

घास, कीड़े-मकोड़े, नीलगिरी के पत्ते, ज़िंदा मछली, चूहा, जानवरों की सड़ती लाशें..... छी! सारा मज़ा बिगाड़ दिया।

लेकिन भाई किसका मज़ा बिगाड़ दिया। हमारा-तुम्हारा न! ज़रा गिद्ध, चीता, सांप, मकड़ी, मेंढ़क, किलकिला वगैरा से तो पूछो..... इन चीज़ों के नाम सुनकर उनके मुंह में पानी भर आया होगा!

अब यह सब तो क़ुदरत का खेल है। केवल इंसान ही एक मात्र ऐसा 'प्राणी' है जो आग पर तरह-तरह के पकवान तैयार करके खाता है। भोजन के लिये खेती करता है। पर शुरू में वह भी शिकार करता था या कंद मूल ढूंढ़कर, खोदकर खाता था, ठीक वैसे ही जैसे आज भी कुछ जानवर करते हैं।

दुनिया में जितने जानवर, पक्षी व कीड़े-मकोड़े हैं, शायद उतने ही भोजन प्राप्त करने के तरीक़े हैं या भोजन के प्रकार हैं। अगर सांप, चूहे को खाता है तो चील, सांप को खाती है। यह क्रम इतना व्यवस्थित है कि अगर जंगल में एक भी पेड़ या जीव-जंतु की नस्ल ख़त्म हो जाती है तो उससे जुड़े तमाम अन्य प्राणी न केवल प्रभावित होते हैं, बल्कि उनके भी ख़त्म होने की नौबत आ जाती है।

हमने पृथ्वी को भले ही भौगोलिक सीमाओं में बांट लिया है, लेकिन जानवरों–पक्षियों के लिए इस विभाजन का कोई अर्थ नहीं। साइबेरिया के पक्षी बर्फ़ व सर्दी से बचने के लिए जाड़े में हज़ारों मील उड़कर भारत आते हैं। विभिन्न प्रकार की मछलियां भोजन की तलाश में समुद्र के अंदर इधर-से-उधर जाती हैं। अफ़्रीका में मौसम के बदलाव के साथ जानवर उत्तर से दक्षिण तक कई देशों में फैल जाते हैं। मतलब जानवरों के लिए सरहद, धर्म, जाति आदि का कोई सवाल नहीं है, सवाल है भोजन का। काश इंसान भी यही सबक़ सीखकर एक साथ रहते हुए संतुलित जीवन बिताता!

कुदरत ने एक-दूसरे पर आश्रित रहने की कितनी अनोखी व्यवस्था की है यह इस मिसाल से समझी जा सकती है। गर्मी में जब अफ़्रीका के जानवर उत्तर की ओर बढ़ते हैं तो सबसे पहले ज़ेब्रा चलते हैं। उन्हें वहां लगभग छह फुट ऊंची घास मिलती है। वे इस घास का ऊपरी हिस्सा खाते हैं। उनके पीछे दक्षिण से बड़े हिरण आते हैं, जो इस घास का बचा हुआ नीचे का हिस्सा खाते हैं। नीचे का हिस्सा खाने से ज़मीन पर लगे अन्य पौधे जो प्रोटीनयुक्त होते हैं, नज़र आने लगते हैं। इन्हें सबसे अंत में पहुंचे छोटे अफ़्रीकी हिरण, थोमसन गेज़ल खाते हैं। यही क्रम हर साल चलता रहता है। अगर क्रम गड़बड़ा जाए तो बड़े हिरण लंबा घास नहीं खा पाएंगे, छोटे हिरणों को, छोटे पौधे नहीं दिखेंगे और ज़ेब्रा परेशान हो जाएंगे। इस कुदरती व्यवस्था को इंसान मशीनीकरण, सड़क, पर्यटन व अन्य ऐसी ही क्रियाओं से बिगाड़ता है, जिसका असर आसपास ही नहीं, बल्कि दूर-दूर तक, सदियों से चली आ रही व्यवस्था व उसके क्रम पर पड़ता है। खैर.......

आओ देखते हैं कि कौन, क्या और कैसे खाता है!

☐ विनोद रायना

दो टिटमाइस चिड़िया दूध पीने के लिए, दूध की बोतल की कैप तोड़ती हुई!

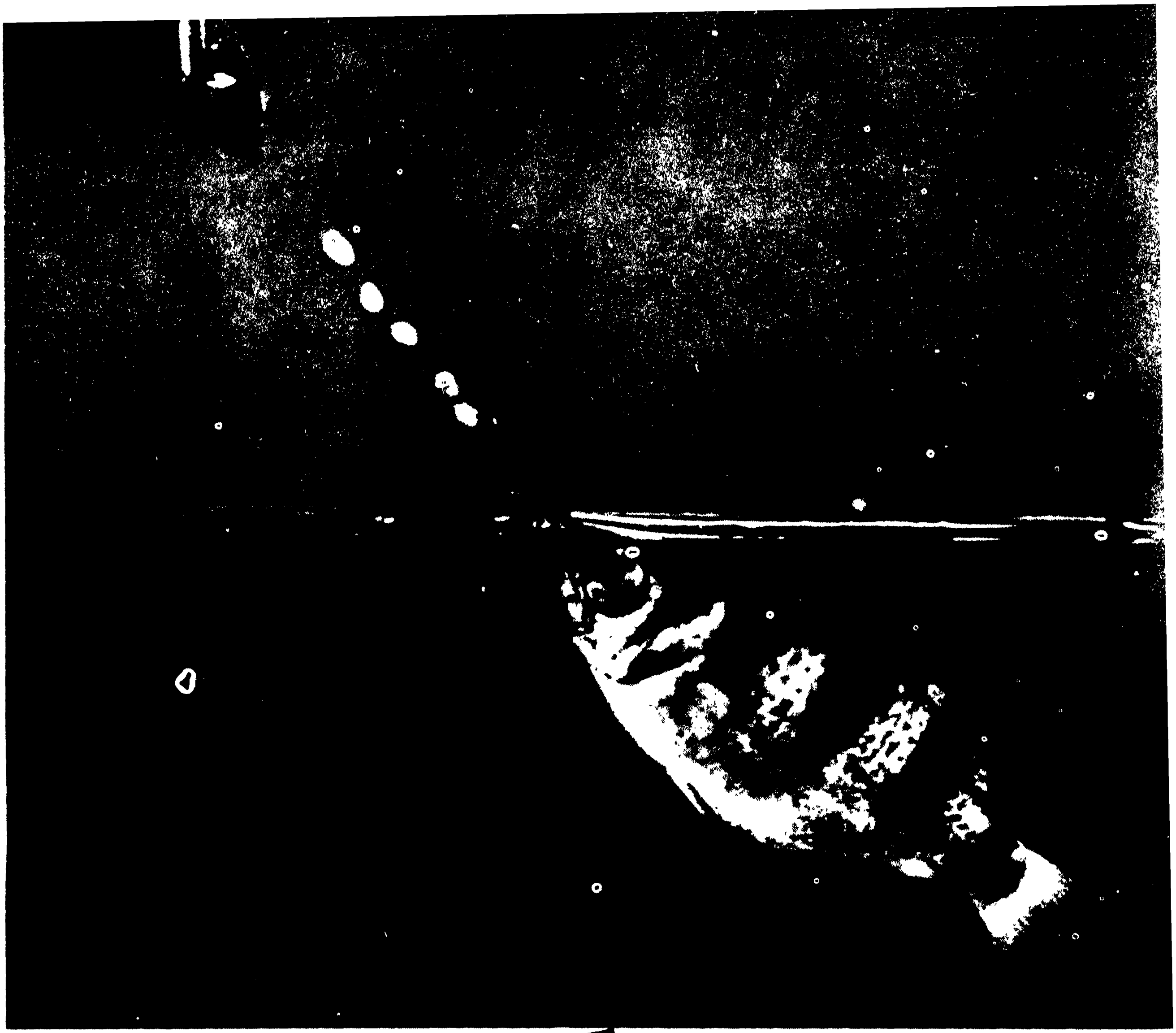

आर्चरफिश मुंह में पानी भरकर, अपने शिकार पर पिचकारी की तरह छोड़ती है। जब शिकार घायल होकर गिरता है तो मछली उसे चट कर जाती है।

समुद्री मछली का शिकार एक मेंढक!

अंडा *भी चलेगा। छोटा-सा मुंह और इतना बड़ा अंडा। थोड़ी ही देर में सांप महाशय अपना मुंह अंडे से भी अधिक बड़ा कर लेगें!*

सांप महाशय के भोजन

छिपकली *से भी भर जाएगा पेट!*

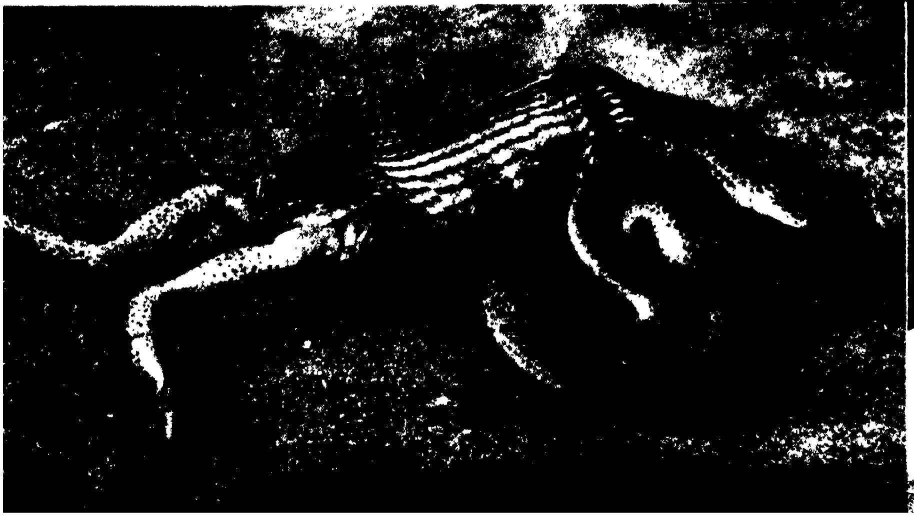

*...**या** फिर मेंढक भी चलेगा!*

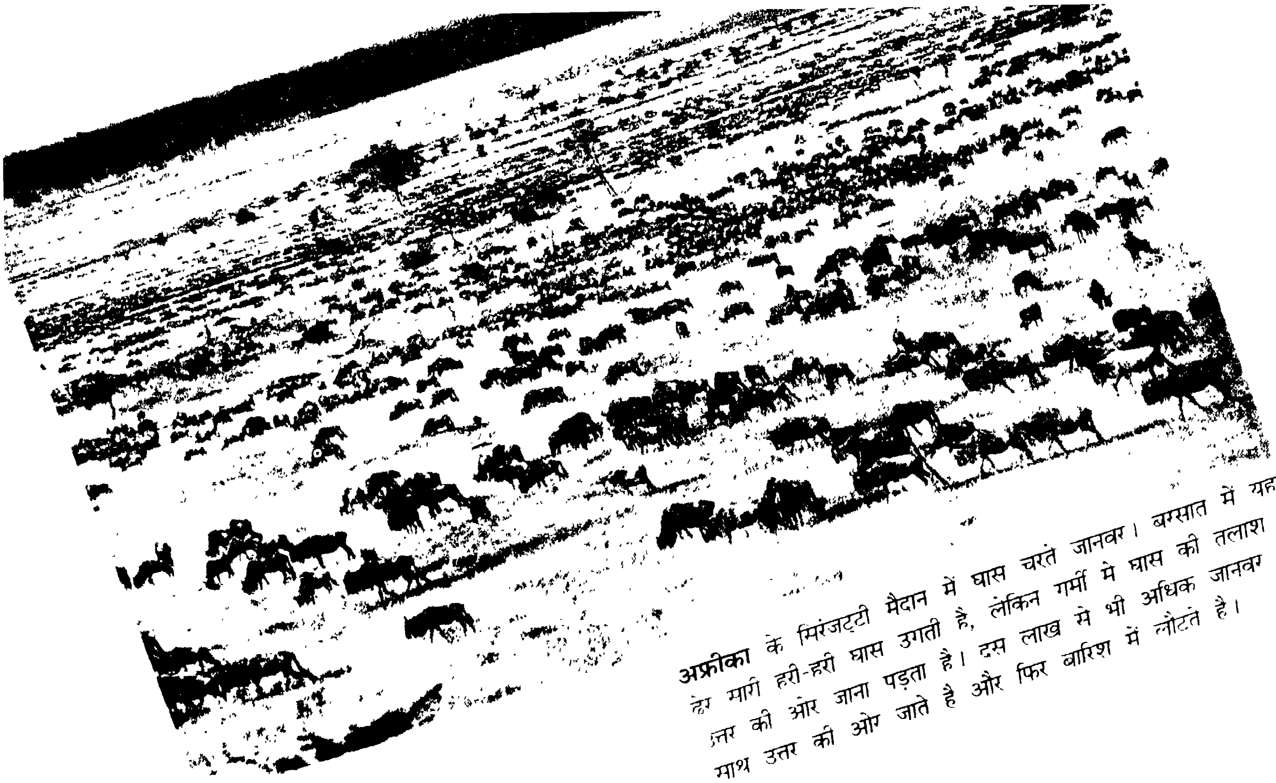

अफ्रीका के सिरंजट्टी मैदान में घास चरते जानवर। बरसात में यहां ढेर सारी हरी-हरी घास उगती है, लेकिन गर्मी में घास की तलाश में उत्तर की ओर जाना पड़ता है। दस लाख से भी अधिक जानवर एक साथ उत्तर की ओर जाते है और फिर बारिश में लौटते है।

लटोरा *(कसाई चिड़िया) इतने अधिक शिकार करती है कि उन्हे खा नहीं पाती। बाद में खाने के लिए अपने शिकार को कांटों पर लटकाकर रखती है।*

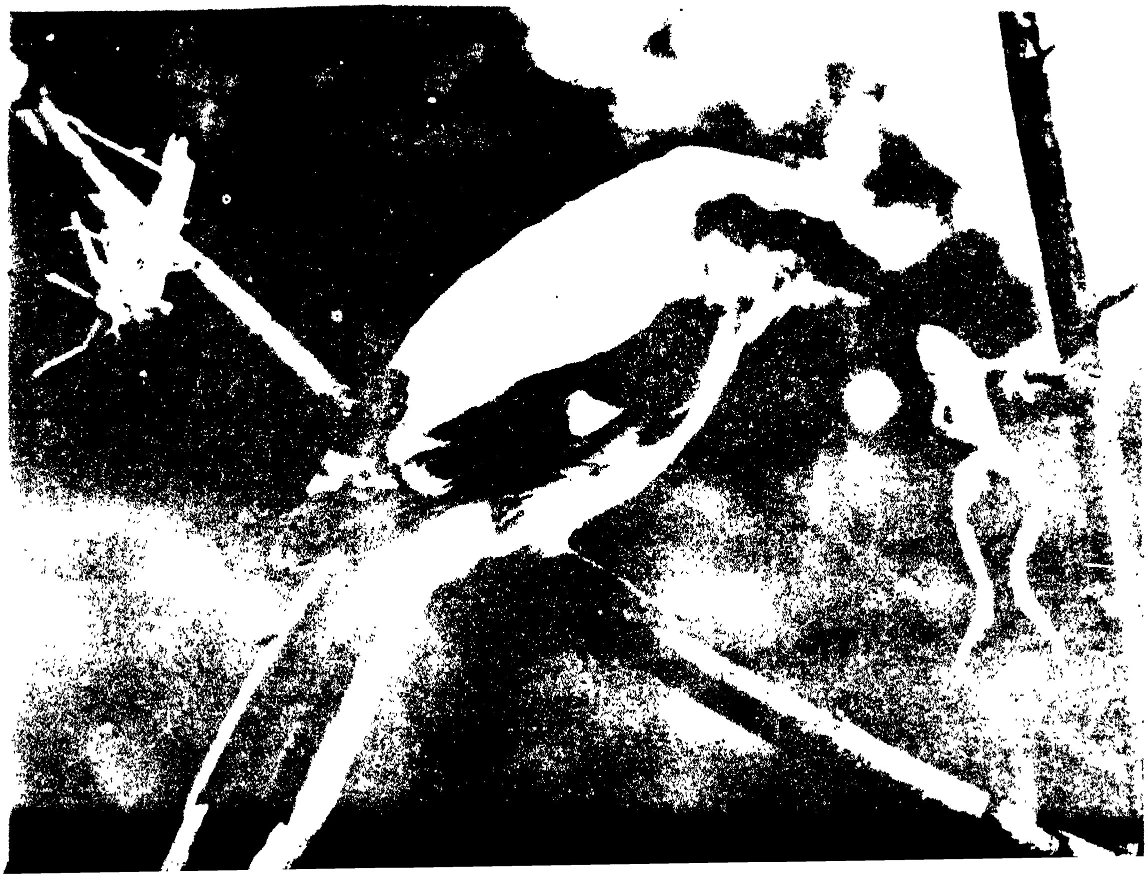

भेड़िए झुंड में शिकार करते हैं। किसी बड़े जानवर जैसे नीलगाय, सांभर आदि के पीछे ये लग जाएं तो उसे दौड़ा-दौड़ाकर थका डालते है और फिर एक साथ झपट्टा मारकर काम तमाम कर देते हैं। गीदड़ व लकड़बग्घे भी इसी तरह झुंड मे शिकार करते है।

धूल उड़ाता हुआ एक **अफ्रीकी ज़ेब्रा**, **चीते** से बचने की कोशिश करता हुआ। चीता दुनिया मे सबसे तेज़ दौड़ने वाला जानवर है। एक मिनट तक यह लगभग सौ किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ़्तार से दौड़ सकता है। पर जल्दी थक भी जाता है, फिर भी शिकार पकड़ने के लिए मिनट भर की यह फुर्ती ही काफ़ी होती है।

गिद्ध खुद नहीं मारते। वे अपने आप मरे या दूसरे जानवरों द्वारा मारे गए शिकार का हथिया लेते हैं। आमतौर पर ये आकाश मे मंडराते रहते है, जैसे ही ज़मीन पर कोई मरा हुआ जानवर आदि दिखता है, एक-एक करके पूरा झुंड नीचे उतर आता है।

बहुत सारे कीड़े व जानवर भोजन पाने के लिए अजीबो-गरीब तरीक़े अपनाते हैं। प्रार्थना करने वाला **टिड्डा** एक तितली को पकड़कर बैठा है। तितली ही उसका भोजन है। यह टिड्डा अपनी पिछली टांगों पर ऐसे खड़ा रहता है जैसे प्रार्थना कर रहा हो। इसका रंग भी ऐसा होता है कि वह घास, पेड़ पत्तियों में घुल-मिल जाता है। शिकार देखते ही लंबी टांगों से आगे बढ़कर झपट्टा मारता है।

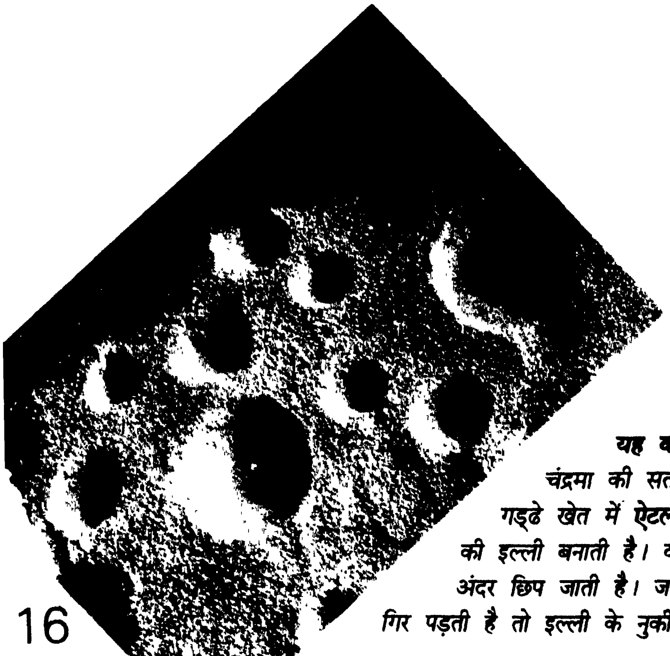

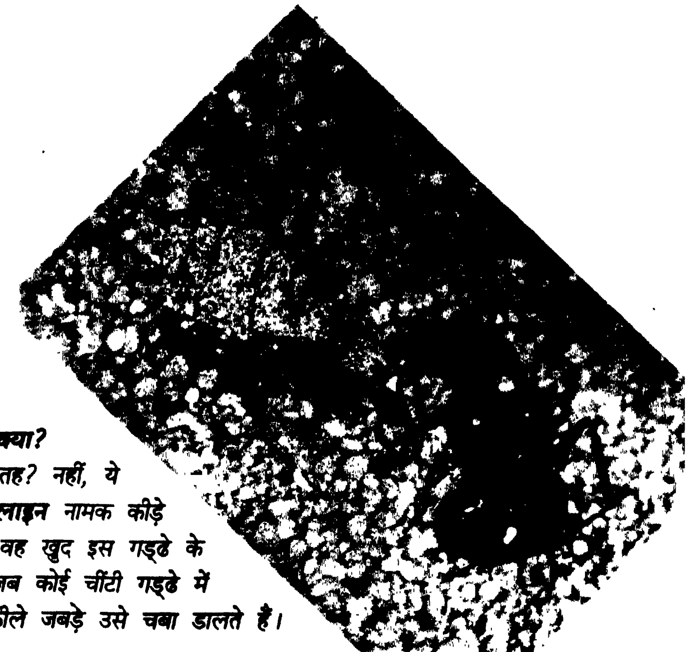

यह क्या?
चंद्रमा की सतह? नहीं, ये गड्ढे खेत में **ऐटलाइन** नामक कीड़े की इल्ली बनाती है। वह खुद इस गड्ढे के अंदर छिप जाती है। जब कोई चींटी गड्ढे में गिर पड़ती है तो इल्ली के नुकीले जबड़े उसे चबा डालते हैं।

मकड़ी और उसका जाल। अपने जाल में [illegible]
मकड़ी उस हरकत का इंतजार कर रही है। [illegible] पता
चलता है कि कोई कीड़ा जाल में फंस गया है। और फिर
अपने जाल पर चलती हुई वहां पहुंचती है जहां उसका
शिकार (तितली) फंस गया है (ऊपर [illegible])।

तेंदुए ने शिकार तो कर लिया, पर [illegible]
गीदड़ों से बचाना भी जरूरी है।

दुनिया पक्षियों की - 27

कबूतर

हमारे निकट रहने वाले और बहुत अधिक परिचित पक्षियों की सूची में कबूतर का नाम काफ़ी ऊपर है। यह पक्षी देश के सभी भागों में पाया जाता है। जंगली अवस्था में पाए जाने वाले कबूतर प्रायः चट्टानों के छेदों और दरारों में रहते हैं। इस कारण इसे अंग्रेज़ी में '**रॉक पिजन**' या '**चट्टानों में रहने वाला कबूतर**' कहते हैं। किंतु अधिकांश कबूतर मनुष्य के निकट रहना पसंद करते हैं। झोंपड़ी, महल, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, स्कूल, अस्पताल - सभी जगह ये अपना अड्डा जमा लेते हैं। रेल्वे स्टेशन और कुंओं की दीवाल भी इनके प्रिय स्थान हैं।

कबूतर का रंग स्लेटी होता है, पंख पर दो काली धारियां होती हैं और पूंछ पर एक चौड़ा काला पट्टा होता है। इसकी गर्दन और सीने पर चमकीला हरा तथा जामुनी रंग पाया जाता है। नर और मादा के रंग रुप में कोई अंतर नहीं होता। मनुष्य ने कबूतर को पाल कर इसकी सैकड़ों उपजातियां बना ली हैं। इनके रंग भिन्न-भिन्न होते हैं—सफ़ेद, काला, कत्थई आदि। किसी के सिर पर बड़ा सा तुर्रा होता है तो किसी की पूंछ पंखे के समान चौड़ी होती है। एक उपजाति के कबूतर उड़ते-उड़ते कलाबाज़ी या गिरह लगाते हैं और इस कारण इसे गिरहमार कहते हैं। एक अन्य उपजाति के कबूतर ज़मीन पर रखते ही लोटने लगते हैं—इन्हें लोटन कहते हैं। इसी प्रकार हर उपजाति की अपनी कुछ विशेषता होती है।

विभिन्न प्रकार के दाने और अनाज कबूतर का भोजन हैं। कुछ लोग पक्षियों को प्रति दिन अनाज खिलाते हैं। ऐसे अवसरों पर कबूतर सैकड़ों की संख्या में इकट्ठे हो कर अधिकांश अनाज को चट कर जाते हैं। अन्य पक्षियों के पल्ले कम ही भोजन पड़ता है। कबूतरों के झुंड खेतों में बोए गए अनाज को ज़मीन से निकाल कर खा जाते हैं। मूंगफली की फ़सल को भी बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। यह पक्षी किसानों का दुश्मन है। जिन भवनों में कबूतर रहते हैं वहां वे तिनके और अपनी बीट गिरा कर काफ़ी गंदगी फैलाते हैं।

कबूतर में एक बड़ा गुण भी होता है। उसमें दिशा पहचानने की अद्भुत क्षमता होती है। यदि उसे उसके डेरे से सैकड़ों किलोमीटर दूर ले जा कर छोड़ दिया जाए तो वह उड़कर कुछ ही घंटों में वापस अपने स्थान पर पहुंच जाता है। इसी कारण मनुष्य सदियों से संदेश पहुंचाने के लिए कबूतरों का उपयोग करता आ रहा है। कहते हैं बादशाह अकबर ने इस काम के लिए बीस हज़ार कबूतर पाल रखे थे। आजकल संदेश भेजने के लिए वायरलेस, टेलीफोन, तार जैसे साधन बन गए हैं, लेकिन कभी-कभी कबूतरों का उपयोग इस काम के लिए करना ही पड़ता है। उड़ीसा राज्य के पुलिस विभाग के पास आज भी कई संदेशवाहक कबूतर हैं।

कबूतर का प्रजनन काल लगभग पूरे वर्ष चलता है, यानि वे एक वर्ष में कई बार अंडे देते हैं। इन दिनों में नर को अपना कंठ फुलाकर गुटरगूं की आवाज़ करते और मादा के इर्द-गिर्द घूमते हुए देखा जा सकता है। दोनों मिलकर तिनकों को बेतरतीब ढ़ंग से रखकर घोंसला बनाते हैं। आमतौर पर ये किसी रोशनदान में या छज्जे के नीचे सुरक्षित स्थान पर घोंसला बनाते हैं, किंतु कभी-कभी इस काम के लिए बड़ी विचित्र जगह चुनते हैं। एक बार मैंने देखा कि कबूतरों का एक जोड़ा एक पंसारी की दुकान में रखे डिब्बों के पीछे घोंसला बना रहा था। दुकान में ग्राहक लगातार आ-जा रहे थे और नर और मादा कबूतर उनकी परवाह किए बिना उनके बिलकुल समीप से उड़-उड़कर, तिनके लाकर घोंसला बना रहे थे।

मादा दो ही अंडे देती है जो दिखने में मुर्ग़ी के अंडों के समान दिखते हैं, किंतु उससे कुछ छोटे होते हैं। नर और मादा मिलकर बच्चों का पालन पोषण करते हैं। कबूतरों की आंत के एक भाग से दूध के समान तरल पदार्थ निकलता है। नर-मादा, बच्चों की चोंच में अपनी चोंच डालकर यह दूध पिलाते हैं। जब तक बच्चे दाना खाने लायक नहीं हो जाते, उन्हें दूध पिलाया जाता है।

□ **अरविंद गुप्ते**

(चित्र सौजन्य . बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, बंबई)

दर्पण के संग खेलो

एक छोटा दर्पण या उसका टुकड़ा लो और **मास्टर चित्र** के पास रखकर उसका प्रतिबिंब देखो। प्रतिबिंब और मास्टर चित्र को मिलाकर एक नया चित्र बनता है। यहां दिए अन्य चित्र ऐसे ही बने हैं। दर्पण को थोड़ा आगे-पीछे खिसकाकर, तिरछा करके रखो और तुम भी बनाने की कोशिश करो!

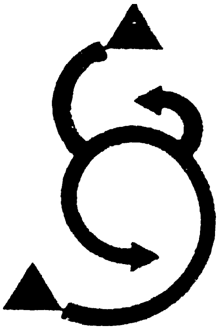

मास्टर चित्र

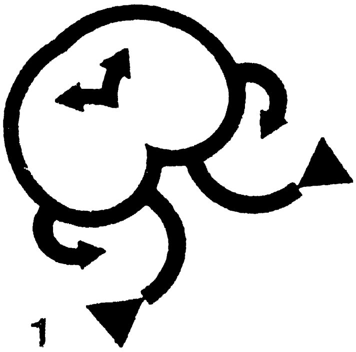

1

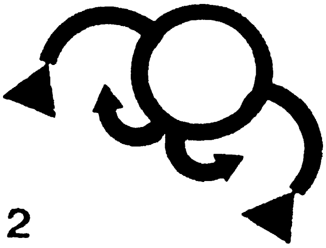

2

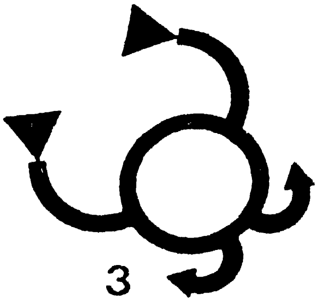

3

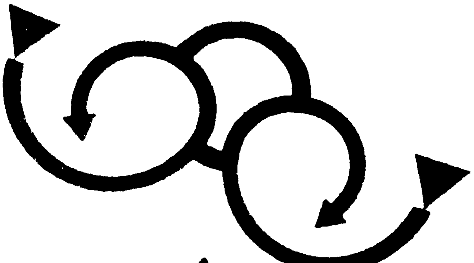

4

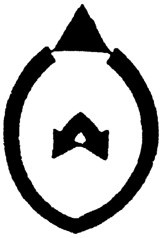

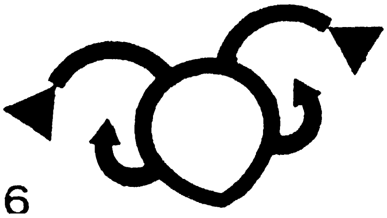

6

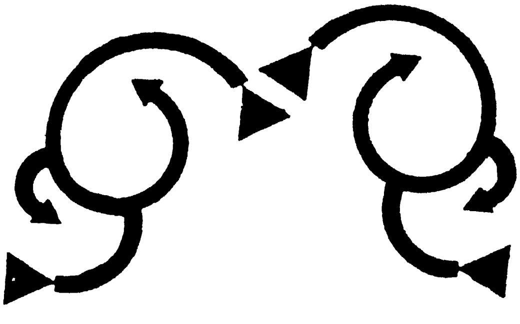

7

8

9

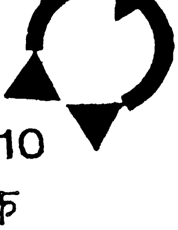

10

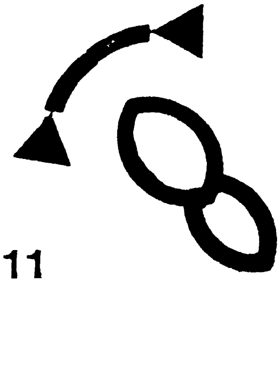

11

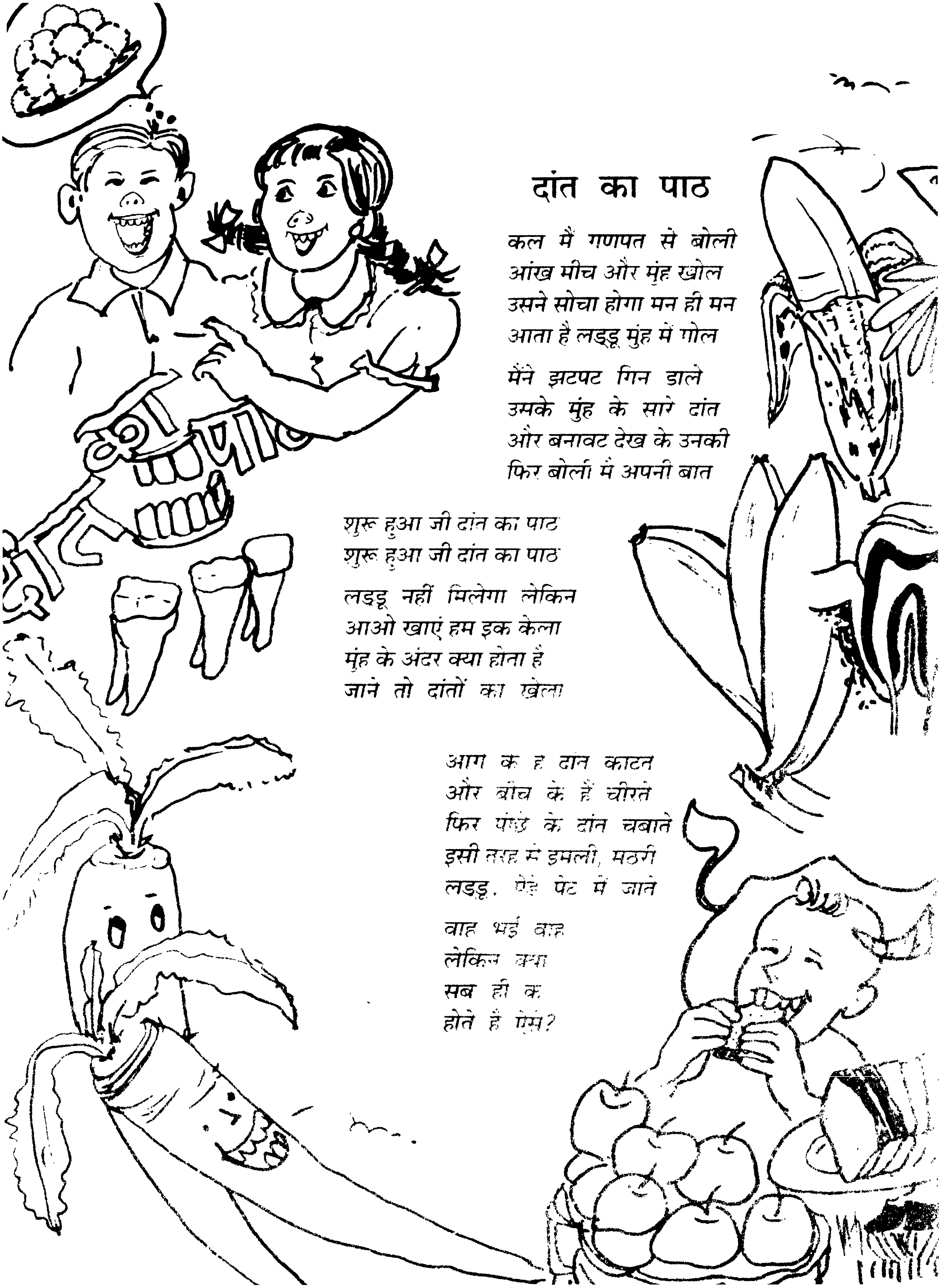

दांत का पाठ

कल मैं गणपत से बोली
आंख मीच और मुंह खोल
उसने सोचा होगा मन ही मन
आता है लड्डू मुंह में गोल

मैंने झटपट गिन डाले
उसके मुंह के सारे दांत
और बनावट देख के उनकी
फिर बोली मैं अपनी बात

शुरू हुआ जी दांत का पाठ
शुरू हुआ जी दांत का पाठ

लड्डू नहीं मिलेगा लेकिन
आओ खाएं हम इक केला
मुंह के अंदर क्या होता है
जाने तो दांतों का खेला

आगे के हैं दांत काटते
और बीच के हैं चीरते
फिर पीछे के दांत चबाते
इसी तरह से इमली, मठरी
लड्डू, पेड़े पेट में जाते

वाह भई वाह
लेकिन क्या
सब ही के
होते हैं ऐसे?

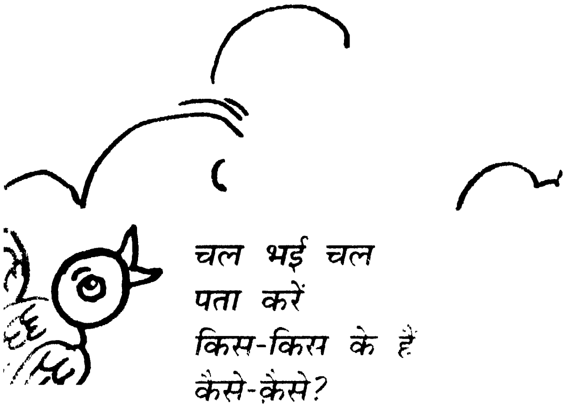

चल भई चल
पता करें
किस-किस के हैं
कैसे-कैसे?

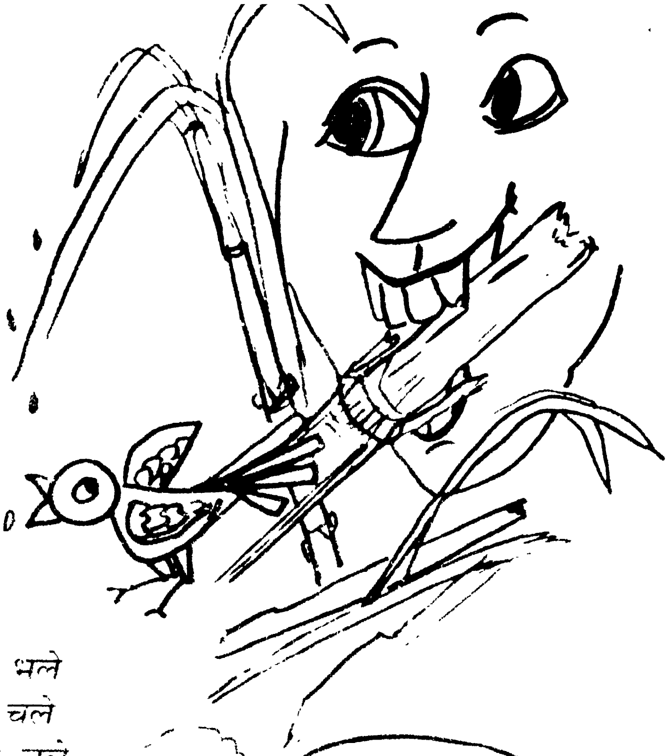

भैंस खड़ी मुस्काकर बोली
हूं मैं मतवाली काली
दांत मेरे चपटे मजबूत
दिन-दिन भर मैं करूं जुगाली

हाथी लगते बहुत भले
सूंड़ हिलाते कहां चले
कान हिलाते कहां चले
दांत दिखाते कहां चले भई
दांत दिखाते कहां चले

चिड़िया तुम हो बड़ी सयानी
बोलो तरह-तरह की बानी
[illegible] नहीं है [illegible] तुम्हारे
क्या तुम केवल पीती पानी

कछुआ श्रीमान
क्या खाइयेगा पान
(अरे . रे . रे...
गलती कर दी..
[illegible] नहीं है, आप
आखिर. मुंह में दांत न

टोक केंचुआ बोला हमसे
भेद अजब ये खोला जम के
मैं पान नहीं चबा पाता
पर खेत की मिट्टी हूं खाता

भेड़िए ने भेड़ मारी
मुंह में लगी हुई है आरी
आओ देखें ज़रा झांक
गोश्त कच्चा खाता है
शाम-सुबह चमकाता है
अपने पैने-पैने दांत

आगे आई
बूढ़ी माई

हिलती डुलती उसकी चाल
भीतर को पिचके थे गाल
पांव बढ़ाती लठिया टेक
दांत थे मुंह में दो-एक
गणपत को कहती वो दन्नपत्त
'खा' सकती वो केवल शर्बत

देख देख हम थे हैरान
नहीं था हमको इसका भान
दांतों के हैं रूप अनेक
दांतों के गुण एक से एक

ठान ली हमने भी लल्ला
आज से ही हो बिसमिल्ला
खाएं रोटी या रसगुल्ला
करना कभी न भूलें कुल्ला

स्मिता अग्रवाल
सभी चित्र : शोभा घारे

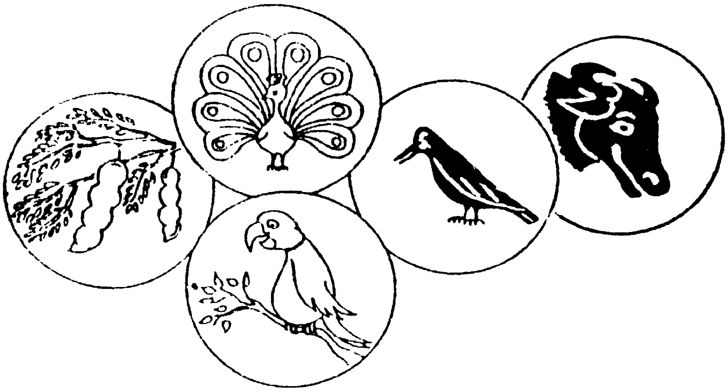

भोजन में क्या होता है?

जब लोग भूख हड़ताल पर बैठते हैं या उपवास करते हैं तो अधिक समय तक ऐसा करने पर उनमें कमज़ोरी आ जाती है और मृत्यु का ख़तरा पैदा हो जाता है।

क्या तुम सोच सकते हो कि अधिक समय तक भूखे रहने पर कमज़ोरी क्यों आ जाती है? क्या भोजन और ऊर्जा में कोई संबंध है?

हम अपने भोजन में कई प्रकार की सब्ज़िया, अनाज, फल आदि लेते हैं? क्या मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े आदि सभी जंतुओं का भोजन एक जैसा होता है? जैसे भैंस घास, खली, भूसा, अनाज आदि खाती है। इसी तरह बताओ कि बिल्ली, चूहा, कौआ, बकरी, मकड़ी, शेर, मुर्गा, छिपकली, मच्छर, तिलचट्टा, खटमल, तितली, पेट के कीड़े, बंदर, कुत्ता, मधुमक्खी क्या खाते हैं। इस सूची को चाहो तो और बढ़ा कर सकते हो। इस विवरण को एक तालिका बनाकर लिख लो।

अब इनमें से ऐसे जीव-जंतु छांटो जो केवल पेड़-पौधे और उनसे मिलने वाली चीज़ें (फल, फूल, अनाज, फूलों का रस आदि) खाते हों। ऐसे जीव-जंतुओं को **शाकाहारी** कहते हैं।

अब ऐसे जीव-जंतु छांटो जो पेड़-पौधों से मिलने वाली चीज़ों के अलावा दूसरे जंतुओं को भी खाते हैं। इन्हें **सर्वाहारी** कहते हैं।

केवल दूसरे जंतुओं या उनके अंडों को खाने वाले जंतुओं को **मांसाहारी** कहा जाता है।

क्या तुम्हारी सूची में ऐसे जंतु भी हैं जो दूसरे जंतुओं को मारे बिना उनके शरीर से भोजन प्राप्त करते हैं? ऐसे जंतुओं को **परजीवी** कहा जाता है।

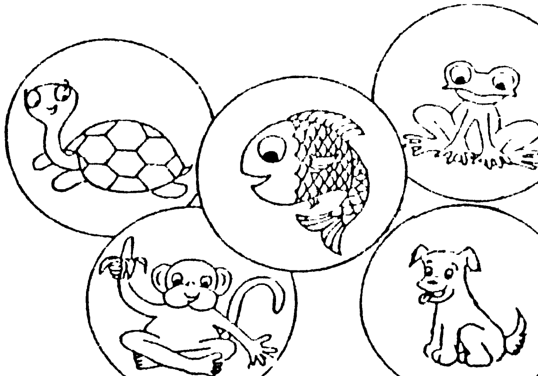

सोचो परजीवी और मांसाहारी जीव-जंतुओं में मुख्य अंतर क्या है?

तुमने देखा होगा कि गाय पहले अपने भोजन को चबाती है, फिर निगलती है। इसमें मदद करते हैं उसके ओंठ, जीभ तथा दांत। इसी तरह मच्छर अपने सिर के नीचे नली के समान बनी रचना से खून चूसता है। तो गाय और मच्छर का भोजन लेने का ढंग क्रमशः चबाना, निगलना और चूसना हुआ। ओंठ, जीभ, दांत तथा नली समान रचना इसमें मदद करती हैं। मेंढ़क, तितली, छिपकली, कुत्ता, मक्खी, बकरी, खटमल, कौआ, गिलहरी...... में भोजन लेने का ढंग क्या होता है? और इसमें उनके कौन-से अंग सहायता करते हैं? इस विवरण को भी एक तालिका बनाकर लिख लो।

यह भी सोचो कि हमारे मुंह में ओंठ, दांत और जीभ नहीं होते तो क्या होता?

अब तक यह तो स्पष्ट हो चुका है कि भिन्न-भिन्न जंतु भिन्न-भिन्न प्रकार का भोजन करते हैं। हमारे भोजन में भी कई प्रकार की चीज़ें होती हैं। क्या इन वस्तुओं में कोई समानता होती है? यह पता करने के लिए हम कुछ आसान प्रयोग कर सकते हैं। हम **वसा** तथा **मंड** का परीक्षण करेंगे।

पहले उबले हुए चावल, उबले चावलों का पानी, कच्चे चावल, गेहूं, ज्वार, गेहूं का आटा, आलू का टुकड़ा, मूंगफली के दाने, तूअर (साबुत), तूअर दाल, घी, दूध, किसी सब्ज़ी (भिंडी, लौकी आदि) का टुकड़ा,

फल (केला, बेर आदि) का टुकड़ा एकत्रित करो। तरल वस्तु को अलग-अलग परखनली (या कटोरी) में रखो और ठोस वस्तुओं को तश्तरी आदि में।

अब एक तालिका बना लो, जिसमें क्रम से वस्तुओं के नाम लिखकर उनके सामने **वसा है या नहीं** तथा **मंड है या नहीं** लिखने के लिए जगह छोड़ो।

प्रयोग-1

जिस पदार्थ का परीक्षण करना है उसकी थोड़ी-सी मात्रा लेकर काग़ज़ के एक टुकड़े पर हल्के से रगड़ो। यदि काग़ज़ पारदर्शक हो जाए तो इसका मतलब है पदार्थ में वसा है।

एक सवाल : मिट्टी का तेल, डीजल या मोम रगड़ने पर भी काग़ज़ पारदर्शक हो जाता है। क्या इनमें वसा होती है? क्या ये भी भोज्य पदार्थ हैं?

प्रयोग-2

जिस पदार्थ का परीक्षण करना हो उस पर आयोडीन के हल्के घोल की दो-चार बूंद डालो। यदि गहरा नीला या काला रंग हो जाए तो उस पदार्थ में मंड है। मंड को **मांड या स्टार्च** भी कहते हैं।

आयोडीन का हल्का घोल बनाने के लिए घाव पर लगाने वाला टिंचर आयोडीन लो। इसकी लगभग 10 बूंद एक परखनली में डालकर परखनली को पानी से आधा भर लो। यही आयोडीन का हल्का घोल है। इसका रंग हल्का-पीला होता है।

अब एकत्र की गई खाद्य वस्तुओं में से एक-एक को लेकर उन पर बारी-बारी से वसा और मंड के परीक्षण करो और अपने निष्कर्ष तालिका में लिख लो।

मनुष्य तथा अन्य जंतुओं के भोजन में वसा, मंड के अतिरिक्त **प्रोटीन**, **लवण** और **विटामिन** भी होते हैं। इन सबको **पोषक पदार्थ** कहा जाता है। प्रोटीन, लवण तथा विटामिन के परीक्षण थोड़े जटिल हैं, इसलिए उनके बारे में चर्चा नहीं कर रहे हैं।

प्रयोगों के आधार पर बताओ कि क्या वसा और मंड भोजन की प्रत्येक वस्तु में हैं?

क्या यह कहना ठीक होगा कि भोजन पदार्थों में एक से अधिक पोषक पदार्थ होते हैं?

क्या साबुत गेहूं और गेहूं के आटे के साथ आयोडीन की क्रिया में कोई अंतर है?

भोजन का पाचन

यह तो हमने जाना कि सब जंतुओं के लिए भोजन आवश्यक होता है। लेकिन भोजन के अधिकतर पोषक पदार्थों का उपयोग शरीर में सीधे-सीधे नहीं हो सकता। इसलिए यह ज़रूरी होता है कि इन पोषक पदार्थों को ऐसे पदार्थों में बदल दिया जाए जिनका उपयोग शरीर कर सके। इस क्रिया को **पाचन** कहते हैं। पाचन क्रिया की कई अवस्थाएं होती है। लेकिन सभी हम नहीं देख सकते। लेकिन मंड का पाचन मुंह में शुरु हो जाता है। इसे एक प्रयोग के ज़रिए देखा जा सकता है।

प्रयोग-3

चार चुटकी आटा एक-चौथाई गिलास पानी में घोल लो। एक परखनली में इस घोल की 10-12 बूंद लो और उसमें आयोडीन के घोल की 2 बूंद डालो। यह देखो कि वह काला या नीला रंग देता है या नहीं! अब दो साफ़ परखनलियों पर काग़ज़ के दो टुकड़े चिपका दो। एक पर '**क**' तथा दूसरी पर '**ख**' लिख दो।

प्रत्येक परखनली में आटे के घोल की 25-25 बूंद डालो। अब '**क**' परखनली को ओठों से लगाकर उसमें थोड़ी-सी **लार (थूक)** डालो। परखनली में लगभग उतनी ही लार गिरनी चाहिए, जितना आटे का घोल है। लार डालकर '**क**' परखनली को अच्छी तरह हिलाओ।

'**ख**' परखनली में लार नहीं डालना है। दोनों परखनलियों को आधे घंटे तक रखा रहने दो। इसके बाद दोनों परखनलियों में आयोडीन की 2-2 बूंद डालो।

देखो कि किस परखनली में मंड अब भी उपस्थित है। यह भी सोचो कि लार मंड पर क्या प्रभाव डालती है?

सोचने की बात तो यह भी है कि भोजन को अच्छी तरह चबाकर खाने के लिए क्यों कहा जाता है?

प्रयोग-4

साबुत गेहूं, पोहा या गेहूं की रोटी के टुकड़े को मुंह में डालकर बिना निगले धीरे-धीरे चबाओ। क्या कुछ समय बाद इसका स्वाद बदला? यदि हां, तो कैसा स्वाद लगा? स्वाद बदलने का क्या कारण हो सकता है?

(सामग्री बालवैज्ञानिक से साभार)

खेल कागज़ का

पिछले अंक में तुमने काग़ज़ का एक जादू देखा था। आओ एक और जादू देखते हैं।

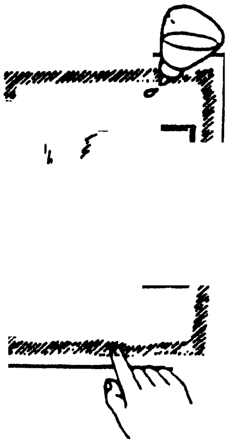

1. सबसे पहले अख़बार का पन्ना लो। उस पर चित्र में दिखाई रेखांकित जगह पर गोंद लगाओ और बीचों-बीच एक रंगीन काग़ज़ या रूमाल रख दो।

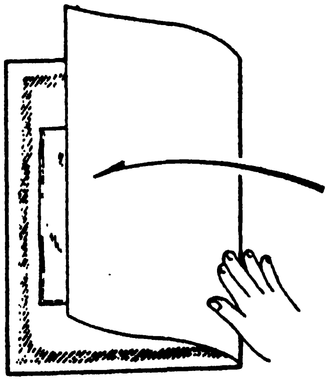

2. अब अख़बार के शेष हिस्से को पलटकर, उस हिस्से पर चिपका दो जहां गोंद लगी है। अब तुम अपना जादू दिखाने के लिये तैयार हो।

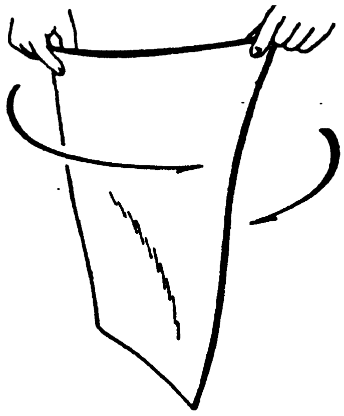

3. अख़बार को अपने दोस्तों के सामने उलट-पलटकर, झटककर बताओ कि वह सिर्फ अख़बार है।

4. फिर अख़बार को हौले-हौले गुड़ी-मुड़ी करते हुए गेंद की शक्ल दे दो। अब कुछ ऐसा अभिनय करो, जैसे तुम कोई जादू कर रहे हो। साथ ही साथ अख़बार को थोड़ा-सा फाड़कर उसमें रखे रूमाल या काग़ज़ को बाहर खींचना शुरु करो।

5. और फिर एक झटके से बाहर खींच लो। निश्चित ही तुम्हारे दोस्त आश्चर्य में पड़ जाएंगे।

नजानू बना चित्रकार!

दृश्य : एक

[दोपहर के बाद का समय। पिछले हिस्से में दाहिनी ओर 'रंगीलाल की चित्रशाला' नाम का एक बोर्ड लगा है। नीचे चित्र और चित्र बनाने का सामान फैला हुआ है। रंगीलाल चित्रपट यानी केनवास पर एक अधूरा चित्र पूरा करने में लगा है। वहीं कोने में बच्चों का समूह। बच्चे गीत गा रहे हैं।]

देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कभी अटके इधर कभी भटके उधर

वहीं गड़बड़ पड़े पांव इसका जिधर
न तो पढ़ने की चिंता न पिटने का डर
करे हर दिन नया एक बवाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो

[गीत ख़त्म होते-होते नजानू गाने वालों के पीछे से प्रकट होता है। और रंगीलाल की ओर जाता है। बच्चे गीत ख़त्म कर नीचे बैठ जाते हैं और नजानू और रंगीलाल की ओर देखने लगते हैं। रंगीलाल नजानू को आते देखकर ख़ुश होता है।]

रंगीलाल : अरे, नजानू! आओ भाई, आओ। कैसे हो?

नजानू : अच्छा ही हूं।

रंगीलाल : और तुम्हारा संगीत सीखना कैसा चल रहा है?

नजानू : संगीत? हुंऽ! जब लोगों में संगीत की समझ ही नहीं हो तो सीखने का क्या फ़ायदा?

रंगीलाल : मतलब?

नजानू : मैंने संगीत सीखना छोड़ दिया।

रंगीलाल : अरे! चलो, अच्छा ही हुआ।

नजानू : अच्छा हुआ! यानी तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो?

रंगीलाल : अरे, नहीं नजानू। मैं तुम्हारा मज़ाक क्यों उड़ाऊंगा? मैं तो तुम्हारा दोस्त हूं।

नजानू : अच्छा, दोस्त! तुम मुझे चित्र बनाना सिखाओगे?

रंगीलाल : तुम फिर से चित्रकारी करोगे!(**हंसता है।**) याद है, जब तुमने पिछले साल डॉक्टर गोलीवाला की दीवार चित्र बनाया था तो कैसा तमाशा हुआ था?

बोलो, सिखाओगे?

रंगीलाल : तुम्हारा इरादा इतना पक्का है तो ज़रूर सिखाऊंगा। लो, यह ब्रश लो।

नजानू : अरे! एकदम अभी से?

रंगीलाल : हां-हां, क्यों नहीं? चलो, देखो, ब्रश कैसे पकड़ते हैं....

[रंगीलाल नजानू को ब्रश चलाना सिखाता है। आगे बैठे बच्चे सामने की ओर मुड़ते हैं और गाना शुरू करते हैं।]

बच्चे :

देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उलटी हर चाल देखो

[गीत ख़त्म होता है। बच्चे नजानू की ओर देखते हैं। नजानू अपना ब्रश चलाना ख़त्म करता है और ब्रश धोने लगता है।]

नजानू : मुझे लगता है, चित्र बनाना कोई ख़ास मुश्किल नहीं है। बस, थोड़ा-सा ध्यान लगाए रखने की ज़रूरत है। क्यों, दोस्त?

रंगीलाल : हां ध्यान लगाए रखने की ज़रूरत तो है ही। तुम कुछ दिन की मेहनत के बाद अच्छे चित्र बना सकते हो।

[गीत गाने वाले बच्चों में से एक, छोटू रंगीलाल की चित्रशाला की ओर जाता है।]

रंगीलाल : वह देखो छोटू आ रहा है तुम चाहो तो उसका चित्र बना सकते हो।

नजानू : हां-हां, ज़रूर। **(छोटू को पुकारता है।)** छोटू! जरा सुनो।

छोटू : क्या बात है, नजानू?

नजानू : सुनो, अपना चित्र बनवाओगे?

छोटू : तुमसे?

नजानू : हां, और क्या? मैं रंगीलाल से चित्र बनाना सीख रहा हूं, न।

छोटू : अच्छा, लेकिन बदले में तुम्हें क्या देना होगा?

नजानू : अरे, कुछ नहीं। बल्कि मैं तुम्हें तुम्हारा चित्र भेंट कर दूंगा।

छोटू : तुम सच कह रहे हो?

रंगीलाल : हां, छोटू। अपना चित्र बनवा कर तुम चित्रकारी सीखने में नजानू की मदद ही करोगे।

छोटू : अच्छा, ठीक है लेकिन ज़्यादा देर मत लगाना।

नजानू : अरे, बिलकुल देर नहीं लगेगी। बस, पांच मिनट लगेंगे। अच्छा, तुम यहां बैठ जाओ।

[नजानू छोटू को एक स्टूल पर बिठाता है। रंगीलाल कैनवास आदि जमाने में नजानू की मदद करता है। नजानू छोटू का चित्र बनाने लगता है। रंगीलाल चित्रशाला के भीतर चला जाता है।]

छोटू : मुझे दिखाओ, तुम मेरा चित्र कैसा बना रहे हो?

नजानू : तुम बोलो नहीं और हिलो-डुलो भी मत। नहीं तो चित्र में तुम्हारी सूरत ठीक नहीं बन पाएगी।

छोटू : तो क्या चित्र में मेरी सूरत बिलकुल ऐसी ही बनेगी?

नजानू : और क्या! हू-बहू ऐसी ही।

छोटू : और कितनी देर लगेगी?

नजानू : बस, एक मिनट और।

[छोटू चुप होकर बैठ जाता है नजानू कोई गीत गुनगुनाते हुए चित्र पर एक-दो बार ब्रश घुमाता है और ब्रश धोकर चित्र कैनवास पर से उतारता है।]

छोटू : चित्र बन गया, नजानू?

नजानू : **(चित्र को ऐसे पकड़े है कि छोटू उसे न देख पाए।)** हां बन गया।

छोटू : ज़रा मुझे दिखाओ।

[नजानू चित्र छोटू की ओर घुमा देता है। छोटू चिल्लाता है।]

छोटू : क्या मैं ऐसा हूं?
नजानू : और क्या, ऐसे ही तो हो। और कैसे हो सकते हो?
छोटू : तुमने चित्र में मूंछें क्यों बनाई हैं? मेरी तो मूंछें हैं ही नहीं!
नजानू : अभी नहीं हैं, लेकिन कभी न कभी तो निकलेंगी।
छोटू : अच्छा, लेकिन नाक लाल क्यों है?
नजानू : नाक को लाल मैंने इसलिए बनाया है ताकि वह सुंदर नज़र आए।
छोटू : और बाल आसमानी रंग के क्यों हैं? मेरे बाल क्या तुम्हें आसमानी दिखाई देते हैं।
नजानू : नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन चित्रकार की अपनी कल्पना भी तो कुछ होती है।
छोटू : न तो तुम चित्रकार हो न तुम्हारी कोई कल्पना है। छिः!
नजानू : तुम नाराज़ क्यों होते हो? अगर तुम्हें आसमानी रंग के बाल पंसद नहीं है तो मैं उन्हें हरा बनाए देता हूं।
छोटू : नहीं। यह बहुत ख़राब चित्र है। मुझे दो, मैं इसे अभी फाड़ देता हूं।
नजानू : अरे तुम इतनी अच्छी रचना को नष्ट करोगे?
[छोटू चित्र छीनना चाहता है। नजानू और छोटू आपस में झगड़ने लगते हैं। शोर होने पर गीत गाने वाले बच्चे उनके पास आते हैं।]
टुन्नी : तुम दोनों लड़ क्यों रहे हो?
नजानू : यह अपना चित्र फाड़ना चाहता है।
छोटू : मेरा चित्र! ज़रा देखो तो तुम लोग! क्या यह मेरा चित्र है?
[टुन्नी हाथ बढ़ाकर नजानू से चित्र ले लेती है। सारे बच्चे देखते हैं।]
टुन्नी : नहीं, यह तुम्हारा चित्र नहीं है।
मोटू : इसमें तो कौओं को डराने के लिए बिजूका बना है।
नजानू : तुम लोग ठीक से समझ नहीं पा रहे हो क्योंकि इस चित्र पर छोटू का नाम नहीं लिखा है। मैं अभी इस पर नाम लिख देता हूं तब तुम सब लोग समझ जाओगे कि यह किसका चित्र है।
[नजानू पेंसिल उठाकर चित्र पर छोटू का नाम लिखता है और उसे दीवार पर टांग देता है।]
छोटू : तुमने चित्र दीवार पर क्यों टांगा?
नजानू : इसलिए कि सब इसे ठीक से देख सकें।
छोटू : अच्छा, ठीक है। जब तुम सो जाओगे तब मैं आऊंगा और इस चित्र को उतारकर फाड़कर फेंक दूंगा।
नजानू : मैं रात भर सोऊंगा ही नहीं और पहरा देता रहूंगा।
टुन्नी : रहने दे, छोटू। यह इस चित्र पर प्रधानमंत्री का नाम लिख देगा, तो क्या यह चित्र प्रधानमंत्री का हो जाएगा?
जल्दबाज़ : हां, और क्या? चलो, शाम हो रही है घर चलते हैं।
सब : हां-हां। चलो, चलो।

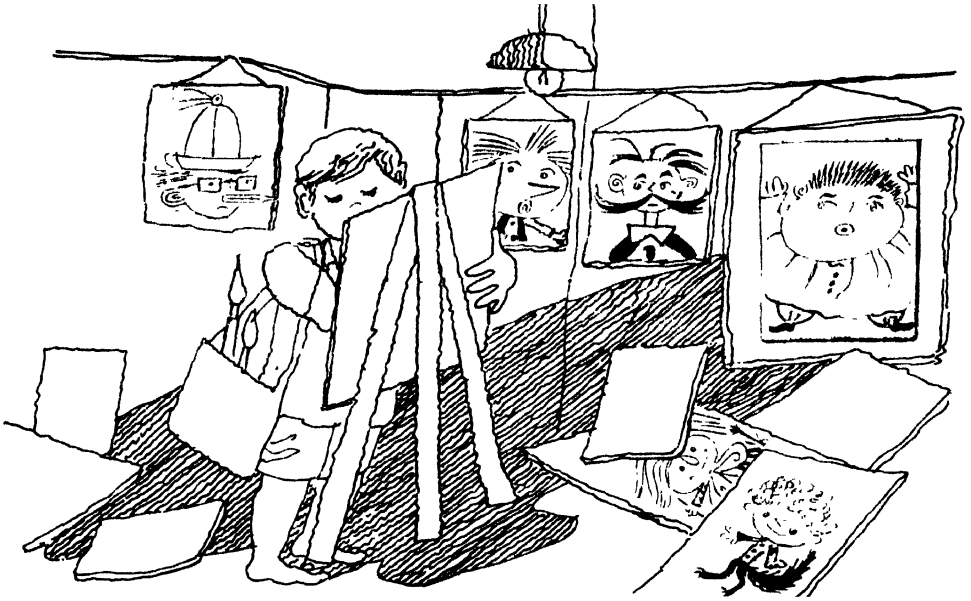

[सारे बच्चे जाते हैं। रंगीलाल भी जाने को तैयार होता है।]

रंगीलाल : तो, नजानू, तुम क्या सचमुच रात में यहीं रहोगे?

नजानू : हां। और, रात में मैं इन सारे नमूनों के चित्र बनाऊंगा। तुम मेरे घर पर जाकर बता दोगे?

रंगीलाल : हां बता दूंगा।

[रंगीलाल भी जाता है नजानू एक नया चित्र बनाने लगता है। अंधेरा।]

दृश्य : दो

[स्थान वही। रात का समय। नजानू बहुत तेज़ी से चित्र बनाने में लगा है। बहुत सारे चित्र यहां वहां फैले हैं। नजानू अधूरा चित्र पूरा करता है और उसे सूखने के लिए छोड़ देता है फिर, फैले हुए चित्र एक-एक कर उठाता है और दीवार पर लगाने लगता है। दीवार की जगह मंच के अगले हिस्से में रस्सियां या धागे बांधकर उन पर भी चित्र लगाए जा सकते हैं। फिर अंधेरा।]

दृश्य : तीन

[प्रकाश। वही स्थान। सुबह का समय। चित्रों की एक प्रदर्शनी जैसी लगी है। नजानू, चित्रों के नीचे फ़र्श पर गहरी नींद में सो रहा है। डॉक्टर गोलीवाला आता है वह एक-एक कर सारे चित्र देखता है और खूब हंसता है। ज़रा हंसी थमने पर वह नजानू को जगाता है।]

गोलीवाला : नजानू! अरे ओ नजानू! उठ। सबेरा हो गया।

[नजानू उठता है?]

नजानू : क्यों जगा दिया? क्या बात है?

गोलीवाला : अरे, उठ तो। तू तो एक ही दिन में सचमुच बहुत बड़ा कलाकार बन गया। वाह, शाबास। क्या चित्र बनाए हैं।

नजानू : तुम्हें सचमुच यह चित्र अच्छे लगे?

गोलीवाला : हां भाई, हां। मैं अपने जीवन में कभी इतना नहीं हंसा। अच्छा तूने मेरा चित्र नहीं बनाया?

नजानू : बनाया तो है, यह देखो।

[नजानू एक चित्र की ओर इशारा करता है डॉक्टर गोलीवाला एक क्षण गंभीर होकर चित्र देखता है फिर सख़्त आवाज़ में नजानू से पूछता है।]

गोलीवाला यह मेरा चित्र है?

नजानू और क्या तुम्हारा ही तो है देखो इस पर तुम्हारा नाम भी लिखा है।

गोलीवाला लेकिन मैं तो ऐसा नहीं हूं। यह तो बहुत ख़राब चित्र है। अच्छा होगा अगर तुम इसे यहां से उतार दो।

नजानू : क्यों उतार लूं! यह तो ऐसे ही टंगा रहेगा।

गोलीवाला : मुझे लगता है नजानू कि तुम बीमार हो। शायद तुम्हारी आंखें कुछ ख़राब हैं। तुमने यह कब देखा कि मेरी नाक की जगह थर्मामीटर है? तुम्हें रात को अंडी का तेल पीना चाहिए।

नजानू : अंडी का तेल? (**बुरा-सा मुंह बनाता है।**) नहीं, तुम सच कह रहे हो। यह चित्र सचमुच ख़राब बना है।

[इसी समय सारे बच्चे आते हैं और चित्र देख-देखकर खूब हंसते हैं। गुलेलबाज़ अपने चित्र के सामने पहुंच कर चुप हो जाता है। फिर दीवार से अपना चित्र उतार कर हाथ में ले लेता है और चिल्लाकर सबको चुप करता है।]

गुलेलबाज़ चुप! सब चुप होओ।

[बच्चे चुप होते हैं। गुलेलबाज़ अपना चित्र लेकर नजानू के पास जाता है।]

गुलेलबाज़ : यह मेरा चित्र है?

नजानू : हां! और क्या?

गुलेलबाज़ : ध्यान से देखो ज़रा

नजानू : हां तुम्हारा ही है।

गुलेलबाज़ (**ज़ोर से चिल्लाकर**) मैं तुम्हें गुलेल मार दूंगा

[सारे बच्चे फिर हंसने लगते हैं। इस बार डॉक्टर गोलीवाला सबको चुप करता है।]

गोलीवाला बस-बस तुम लोग बेकार ही हंस रहे हो। ज़रा अपने-अपने चित्र देखो, फिर हंसना

[सारे बच्चे अपने-अपने चित्र ढूंढ़कर उतारते हैं और गौर से देखते हैं। फिर वे सबके सब नजानू की ओर झपटते हैं।]

सारे बच्चे यह चित्र है कि रंग में चींटा भिगोकर छोड़ दिया है? तुम सारी ज़िन्दगी चित्र नहीं बना सकते। तुमने हम सबको उल्लू बनाया है। हम तुमसे कभी बात नहीं करेंगे। तुम्हें अपने साथ खिलाएंगे भी नहीं।

[इसी बीच रंगीलाल आता है। वह सारे बच्चों को शांत करता है।]

रंगीलाल शांत हो जाओ भाई, शांत हो जाओ। बात क्या है?

टुन्नी नजानू को चित्र बनाना तुमने सिखाया है?

रंगीलाल हां, लेकिन बात क्या हुई?

टुन्नी : देखो, और अच्छी तरह सोचकर बताओ कि क्या यह मेरा चित्र है?

सारे बच्चे : यह देखो मेरा चित्र। और यह मेरा है क्या? मेरा....

रंगीलाल : बस करो भाई, बस करो।(**बच्चे शांत होते हैं।**) देखो, बात यह है कि नजानू को चित्र बनाना सीखते हुए अभी एक ही दिन तो हुआ है। और वैसे भी ये चित्र ख़राब तो नहीं बने।

मोटू : हां-हां, क्यों नहीं। लेकिन पहले अपना चित्र देख लो, फिर यह बात कहना।

रंगीलाल : मेरा चित्र? कहां है मेरा चित्र?

[नजानू टंगा हुआ आख़िरी चित्र उतारकर देता है।]

नजानू : लो यह रहा।

रंगीलाल : यह मेरा चित्र है? नहीं, नहीं यह नहीं हो सकता।

मुन्नी : क्यों पसंद आया अपना चित्र?

[सारे बच्चे ज़ोर से हंसते हैं। रंगीलाल ज़ोर से चिल्लाता है।]

रंगीलाल : नजानू....

नजानू : (**डर कर**) क्या है?

रंगीलाल : तुम एकदम अनाड़ी हो। गधे। मूर्ख। तुम कभी कलाकार नहीं बन सकते। तुम भागो यहां से और कभी मुझे मुंह मत दिखाना।

[सारे बच्चे हंसते हैं। नजानू डर कर चुपचाप चलने लगता है और मंच के आगे के हिस्से में आकर खड़ा हो जाता है। हंसने वाले बच्चों की आवाज़ धीमी होती है।]

नजानू : (**दर्शकों से**) अब मैं कभी चित्र नहीं बनाऊंगा मैं कभी कलाकार ही नहीं बनूंगा। लोगों के लिए कविता लिखो या संगीत सुनाओ या चाहे उनके चित्र बनाओ सब नाराज़ ही होते हैं, कोई अच्छा नहीं कहता.... (**अचानक चिल्लाकर बच्चों से**) लेकिन तुम लोग यह मत समझो कि मैं कभी कुछ कर ही नहीं सकता एक दिन ज़रूर कुछ कर दिखाऊंगा। (**बच्चे फिर ज़ोर से हंसते हैं। नजानू और ज़ोर से चिल्लाता है।**) और अगली बार मैं तुम लोग से तभी मिलूंगा, जब कुछ सीख लूंगा।

[बच्चे खूब ज़ोर-ज़ोर से हंसते हैं। नजानू गुस्से में बाहर जाता है। बच्चे आगे आकर गीत गाते गाते हैं।]

देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उलटी हर चाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो।

[गीत ख़त्म होता है।]

निकोलाई-नोसोव की कहानी का नाट्य रूपांतर, द्वारा कविता सुरेश
सभी चित्र : धनंजय

माथापच्ची

(1)

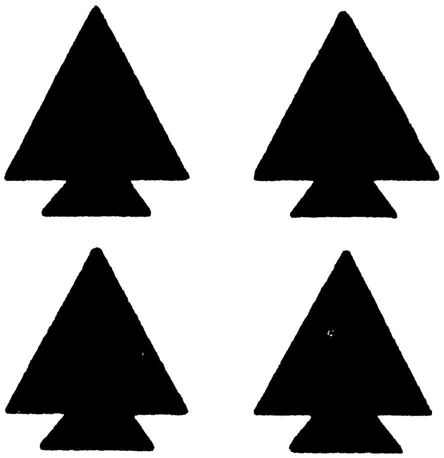

इन चार आकृतियों को इस तरह जमाना है कि ऐसी ही एक और आकृति बन जाए यानी पांच आकृतियां हो जाए।

(2)

यहां *कुछ वाक्यों के जोड़े दिए हैं। पढ़ने में वे एक ही अर्थ के लगते हैं, पर हैं भिन्न। क्या भिन्नता है इनमें—*

1. ***(क)*** *- छोटी बातों पर मत लड़ो।*
(ख) *- छोटी-छोटी बातों पर मत लड़ो*
2. ***(ख)*** *- मैंने बड़े लोगों को देखा है।*
(ख) *- मैंने बड़े-बड़े लोगों को देखा है।*
3. ***(क)*** *- कमरे में सांप है।*
(ख) *- सांप कमरे में है।*
4. ***(क)*** *- मैंने जंगल में शेर देखा।*
(ख) *- मैंने जंगल में शेर को देखा।*

(3)

अगर तुम बाहर बारिश में पांच मिनट तक रहते हो, तो अपने आपको कम से कम गीला होने से बचाने के लिए दौड़ लगाओगे या चलोगे? यानि अधिक गीले कब होओगे, दौड़ने पर या चलने पर।

(4)

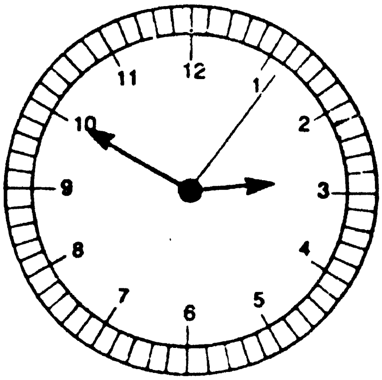

यह घड़ी अगर प्रत्येक घंटे में चार सेंकड पीछे हो जाए तो बताओ, $3^1/_2$ घंटे बाद इसमें क्या 'समय' होगा?

(5)

गर्म और ठंडे पानी में से कौन-सा जल्द बर्फ़ बनेगा?

(6)

9696
1691
8668
818
8169

इन संख्याओं को ध्यान से देखो। अगर तुम चकमक उल्टी भी कर दो तब भी ये संख्याएं वैसी ही रहेंगी, सिर्फ़ एक को छोड़कर। उलटकर देखने से पहले उस संख्या को पहचानने की कोशिश तो कर लो।

(7)

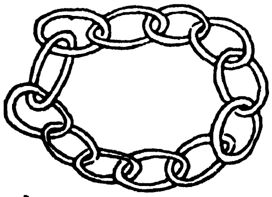

बनाने वाले ने चेन बहुत मज़बूत बनाई है। फिर भी वह एक जगह से कमज़ोर रह गई है। कहां है वह जगह?

(8)

916 (160) 916

971 (177) 879

245 (   ) 511

ऊपर के दो उदाहरणों के आधार पर सोचो कि तीसरी पंक्ति के कोष्ठक में कौन सी संख्या आएगी?

(9)

O

O

O

O O O O O

आठ सिक्कों को चित्र में दिखाए आकार में जमाओ। अब केवल कोई एक सिक्के की जगह बदलकर इस तरह जमाओ कि खड़ी और आड़ी दोनों पंक्तियों में पांच-पांच सिक्के हों।

(10)

1417, 1605, 1812, 1533, 1722, 1902 इनमें से पांच संख्याओं में एक समानता है लेकिन छंठवीं में नहीं! छंठवीं संख्या कौन-सी है?

वर्ग पहेली-3

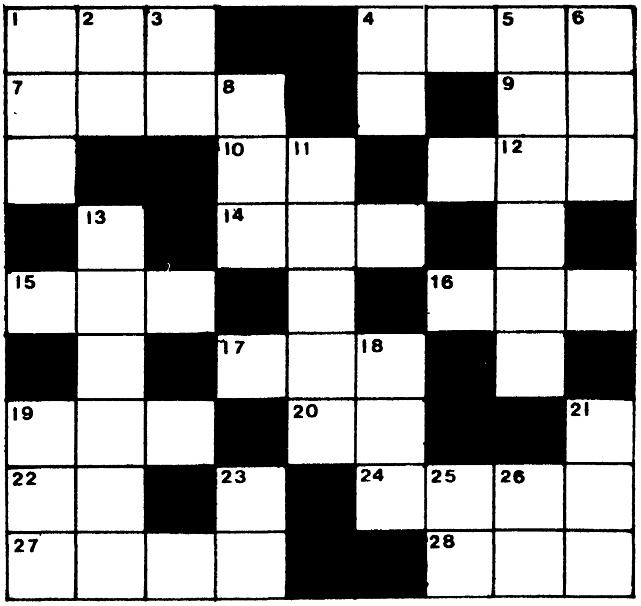

संकेत : बांए से दांए

1. कथा (3)
4. व्यायाम (4)
7. ठंडे को ठंडा, गरम को गरम रखे (4)
9. गुस्से में मरने का आदेश (2)
10. इनमें प्रायः पेड़ों या पौधों के बीज रहते है (2)
12. उज्जैन के एक राजा से जुड़ा पात्र (3)
14. कुंओं से पानी निकालती है (3)
15. बिना पत्तों का (3)
16. शुरुआत (3)
17. पहले नौकरी से निकाला फिर रखा (3)
19. उपासक में रूई (3)
20. आवाज़ (2)
22. साथ-साथ (2)
24. चीन में बनने वाला एक सूती कपड़ा (4)
27. विशाल भारतीय सब्ज़ी, मगर कांटेदार (4)
28. एक अनाज (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. उक्ति या किसी के द्वारा कही बात (3)
2. माला भी, पराजय भी (2)
3. एक तो करेला, उस पर... चढ़ा (2)
4. किस समय? (2)
5. ... जोगी... पानी (3-3)
6. द्रव (3)
8. यात्रा (3)
11. फ़सलों का... देख मन झूम उठता है (5)
13. ठंड में होती है (6)
18. दूसरों पर बोझ बनना (3)
19. पीड़ा भी, दर्द भी और बैर भी (3)
21. पेड़ की शाखा
23. जो गया भी, आएगा भी (2)
25. गीला (2)
26. चीख़ (2)

(आशा अय्यर, नेपानगर द्वारा तैयार)

क्यों... क्यों... 5 पाठकों के जवाब

जनवरी, 91 के अंक में प्रकाशित क्यों... क्यों... 5 के जवाब में कोई 40 पत्र प्राप्त हुए हैं। सवाल था **कि शरीर पर छिपकली गिरने से क्या होता है, फिर नहाने के लिए क्यों कहा जाता है?**

अधिकांश पत्रों में यह जवाब लिखा गया है कि छिपकली एक अछूत जीव है, इसलिए उसे छू लेने पर या उससे छू जाने पर शरीर अपवित्र हो जाता है। शरीर को शुद्ध करने के लिए ही नहाना ज़रूरी होता है। साथ ही उसके शुभ-अशुभ प्रभाव की भी बात की गई है।

छूत-अछूत की बात या धारणा को विज्ञान नहीं मानता है। रही उसके शुभ-अशुभ के प्रभाव की बात, तो वह एक संयोग मात्र होता है कि छिपकली शरीर पर गिरे और उसी दिन कोई ऐसी घटना घट जाए जिससे लाभ-हानि हो। वास्तव में उसका छिपकली के गिरने से कोई संबंध नहीं है।

कुछ पत्रों में छिपकली के बारे में अन्य बातें कही गई हैं, **जैसे छिपकली ज़हरीली होती है। उसकी बाह्य त्वचा पर हानिकारक कीटाणु पाए जाते हैं। छिपकली की लार में ज़हरीला पदार्थ होता है, जो किसी अन्य के संपर्क में आते ही बाहर निकलने लगता है, जिससे खुजली आदि होने लगती है।**

वास्तव में ये सब **कपोल कल्पनाएं** हैं। छिपकली की 1900 ज्ञात जातियों में से केवल दो जातियां ही ऐसी पाई गई हैं जो ज़हरीली होती हैं। इनके मुंह के अंदर विष ग्रंथि होती है और विष को शत्रु के शरीर में प्रवेश कराने के लिए दांत भी। ये दोनों जातियां भारत में नहीं पाई जातीं। इनमें से एक उत्तरी अमेरिका के मध्य मेक्सिको से लेकर, मध्य अमेरिका तक मिलती है और दूसरी न्यू मेक्सिको और ऐरिजोना में।

घरों में पाई जाने वाली छिपकली की तीन सौ से अधिक जातियां अभी तक देखने में आई हैं। ये मुख्यतः गर्म प्रदेशों में पाई जाती हैं। **घर में पाई जाने वाली छिपकली ज़हरीली नहीं होती है और न ही अन्य किसी रूप में, इसके अन्य किसी अंग में ज़हर होता है।** इसके काटने से भी कोई नुकसान नहीं होता। इसके शरीर पर कोई रोगाणु नहीं पाए जाते। इनके पंजों की बनावट ऐसी होती है जिससे ये दीवार पर तथा छत पर चिपकी रह सकती हैं।

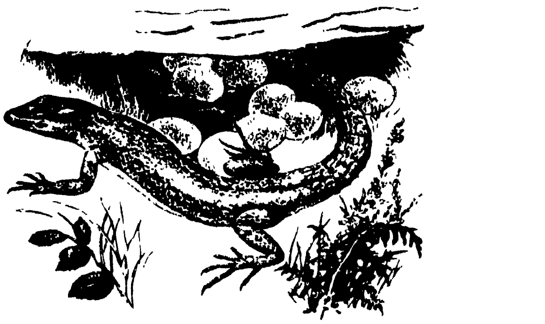

तुमने सुना होगा कि पकते हुए खाने में छिपकली गिर जाने से खाना ज़हरीला हो गया और उसे खाने वाले बीमार। ऐसा सिर्फ़ छिपकली ही नहीं अन्य किसी जीव जैसे चूहा, छंछूंदर आदि के गिर जाने पर भी हो सकता है।

पूंछ छोड़कर भागना घर में पाई जाने वाली छिपकली का एक ख़ास गुण है। ऐसा वह अपने शत्रु को चकमा देने के लिए करती है। पूंछ में हड्डी नहीं होती है। बाद में उसकी नई पूंछ निकल आती है। पर पूंछ भी वह अत्यंत संकट की घड़ी में ही छोड़ती है—जब बचने का कोई और रास्ता न हो।

आमतौर पर छिपकलियां दिनभर सोती रहती हैं और रात को भोजन की तलाश में निकलती हैं। कुछ छिपकलियां दिन में निकलती हैं और रात को सोती हैं।

इन पाठकों ने उत्तर भेजे—शंकरलाल गुप्ता, प्रकाशचंद्र शर्मा, सीताराम जांगिड़, भागीरथ प्रसाद रैगर, सुरेश रावत, मुरारीलाल गुप्ता, पालड़ी, जयपुर। कंचन चौहान, देसूरी। कमलेश अग्रवाल, जयपुर। कृष्णानंद शर्मा, कोटा। प्रकाशचंद्र, नाथडियास, भीलवाड़ा। मंजू देवी पारीक, भांकरी। मूलचंद बाण, जयपुर। **सभी राजस्थान**। निरूपमा कौशिक, खगौल, पटना। रणधीर पांडे, छपरा। राजेश कुमार, गया। मुकेश कुमार, शेखपुरा, **सभी बिहार**। गुरूदीप कौर, **नई दिल्ली**। लालजी बिंद, हरचंदपुर, महेंद्रप्रताप सिंह, इलाहाबाद। नीरज कुशवाहा, हरदोई। ब्रजेन्द्र बहादुर, इटावा। राधेश्याम मौर्य, प्रतापगढ़। अरविंद उपाध्याय, सिसई। अशोक कुमार, पानिशाला। **सभी उ.प्र.**। श्याम सुंदर कोसे, खोरपा, दुर्ग। रामायण प्रसाद द्विवेदी, छपड़ौर, शहडोल। प्रवीण कुमार श्रोत्रिय, शेखपुरा, खंडवा। राधेश्याम यादव, बेलसोंडा, रायपुर। रामअवतार गुप्ता, मेहगांव, जबलपुर। उमाकांत भारद्वाज, बालोद। अश्विनी मिश्र, झाबुआ। पंकज, प्रवीण, सोहन, संदीप, डीकैन, नीमच। शंकरलाल कोरी, हटा, दमोह। ध्रुवसिंह, बानमौर। संजय यादव, पानसेमल। सचिन दुबे, होशंगाबाद। सीताराम शुक्ल, जबलपुर। हसीना बेगम, सल्का, बिलासपुर। कुबेर शरण द्विवेदी छपड़ौर, शहडोल। मुकेश कुशवाहा, शहडोल। **सभी म.प्र.**।

क्यों... क्यों... 10

इस बार मुनिया के गांव में ख़ूब आम लगे। स्कूल की छुट्टी थी सो मुनिया गांव में ही थी। एक दिन उसका मन हुआ कि आज तो ख़ूब सारे आम ही खाए जाएं। बस मुनिया ने एक टोकरी में ख़ूब सारे आम जमा किए और बैठ गई खाने! तभी पड़ोस में रहने वाली उसकी सहेली आ गई और मुनिया से बोली, **'बिन्ना इत्ते सारे आम एक साथ खैवो तो फोड़ा—फुंसी निकर आएंगे। काय सें कि आम गरम होत हैं।'** पहले तो मुनिया सोच में पड़ गई, फिर अपनी सहेली से बोली, 'अरे तुम भी खाओ। निकलेगें, जब निकलेगें, फोड़े-फुंसी! अभी तो आम खाने में मज़ा आ रहा है।' तुमको निकले हैं कभी?'

सहेली बोली, 'हमने खाए ही नहीं कभी इत्ते सारे।'

'तो फिर आज खाकर देख लो।' मुनिया ने जैसे चुनौती दी।

मुनिया ने आम खाना जारी रखा। ऐसी बातें तो उसे हमेशा ही सुनने को मिलती हैं, **'चाय पर पानी मत पियो। केला खाकर पानी मत पियो, अमरूद खाकर पानी मत पियो**। आदि आदि।'

खैर... यह तो थी मुनिया की बात! पर खाने के बारे में ऐसी तमाम धारणाएं प्रचलित हैं। जैसे कि, **भैंस का दूध पीने से बच्चों का दिमाग ठस हो जाता है। छोटे बच्चों को दाल नहीं खिलानी चाहिए, क्योंकि उससे गैस बनती है, आदि।**

तुम क्या सोचते हो, ऐसी धारणाओं के बारे में? सच्चाई क्या है? तुम्हारा अपना अनुभव क्या है? अपने जवाब हमें 15 सितंबर 1991 तक लिख भेजो। लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड पर क्यों... क्यों 10 लिखना मत भूलना!

ध्यान रहे, यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही!

माथापच्ची : हल जून अंक के

1. (1) गुप्त (2) गरम (3) ठंडा (4) एक

2. 18 को छोड़कर बाकी चार से पूरी तरह विभाजित हो जाती हैं।

3.

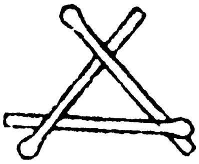

4.

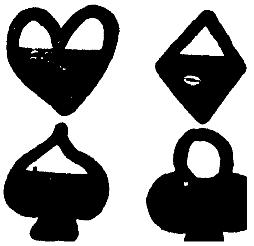

5.

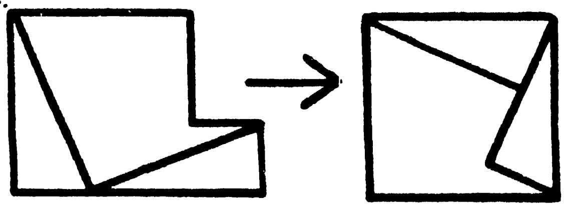

*7. 1-12 - 12 वाले समीकरण मे 1 **दिन** को दर्शाता है। एक दिन मे 24 घंटे होते है अगर 24 में से 12 घंटे कम हो जाएं तो 12 घंटे बचेंगे।*

8. तीली को बर्फ़ के टुकड़े में पैक करने के लिए बर्फ़ पर नमक छिड़कते जाओ और तीली को बर्फ़ में धंसाते जाओ। थोड़ी देर बाद तीली बर्फ़ के अंदर पैक होगी।

9. क = 4, ख = 11

वर्ग पहेली - 2 : हल

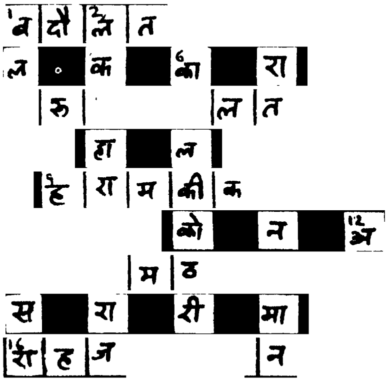

लोककला यानी लोकजीवन का रंग-रूप

हमारे जीवन में जो कला रची-बसी है उसे ही लोककला कहा जाता है। इस कला के चितेरे कोई विशेष व्यक्ति नहीं होते, हमारे-तुम्हारे बीच के व्यक्ति ही इसे बनाते हैं, चित्रित करते हैं। अगर हम अपने घर में ही रोजमर्रा उपयोग में आने वाली चीज़ों को देखें; चाहे वे मटके हों या बर्तन; चूल्हा हो या चक्की; कोठी हो या दरवाज़े; खिड़कियां हों या फिर दीवार पर बनी आकृतियां या फिर पहनने के कपड़े ही क्यों न हों। देखने में सामान्य लगने वाली इन वस्तुओं में एक कलात्मकता होती है, ज़रूरत होती है ध्यान से देखने की। इन वस्तुओं का रंग, रूप और आकार ऐसा होता है, जिसे देखकर हमारा मन प्रफुल्लित हो उठता है, खुश हो उठता है।

लोककला में चित्रकारी का विशेष स्थान है— चाहे वह दीवार पर की गई हो या रंगोली से उभारी गई हो। पारंपरिक तीज-त्यौहार तथा अन्य परिवारी समारोहों के अवसर पर इन्हें बनाया जाता है। इन्हें

छ, गुजरात में उपयोग की जाने वाली कोठी, जो मिट्टी से बनी है।

बनाने के लिए किसी विशेष प्रशिक्षण की ज़रूरत नहीं होती है। रोजमर्रा के और कामों की तरह ही ये भी सीख लिए जाते हैं। चित्र घर-बाहर को सजाने का काम करते ही हैं, बहुधा उनका धार्मिक महत्व भी बतलाया जाता है।

भारत के हर प्रांत के लोग अपने-अपने ढंग से अपनी परंपराओं के अनुसार लोककला को विभिन्न रूपों में चित्रित करते आए हैं। गुजरात से लेकर असम तक, कश्मीर से लेकर केरल तक अनगिनत लोककला शैलियां बिखरी पड़ी हैं।

मधुबनी, उत्तरी बिहार की महिलाओं द्वारा बनाए जाने वाले चित्र मन लुभाने वाली सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां की महिलाएं तीज-त्यौहारों और अन्य अवसरों पर घर की दीवारों को चित्रों से सजाती हैं। उनके पास काग़ज़ में बने छोटे आकार के डिज़ाइन होते हैं। ये डिज़ाइन मां अपनी बेटी को और बेटी अपनी बेटी को सिखाती है। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी लोककला की यह धरोहर सुरक्षित बनी रहती है। चित्र बनाने के लिए गेरू मिट्टी, कोयला तथा फूल-पत्तियों से निकाले गए रंग इस्तेमाल किए जाते हैं।

घरों में बनाए जाने वाले इन चित्रों में महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती है; चाहे वे मधुबनी शैली के

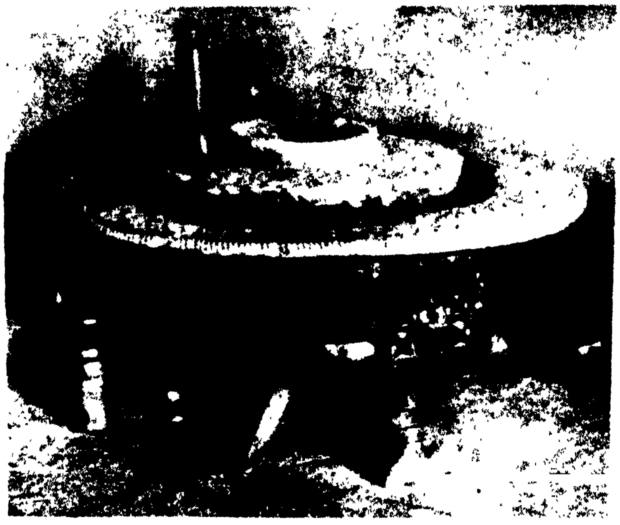

गुजरात की एक चक्की, जिसे से बनी तिपाई पर रखा गया है।

एक मधुबनी चित्र : चित्रकार, महासुंदरीदेवी। इस चित्र को देखना अच्छा लगता है। विवाह के मंगलमय वातावरण को इसमें सुंदर तरीके से चित्रित किया गया है। दुल्हा-दुल्हन के चारों ओर उल्लास का वातावरण है। चित्र में कई सारी चीज़ें चित्रित की गई हैं। उसमें बने पेटर्न घने हैं, लेकिन फिर भी उनमें आंखों में चुभने वाली कोई बात नहीं है।

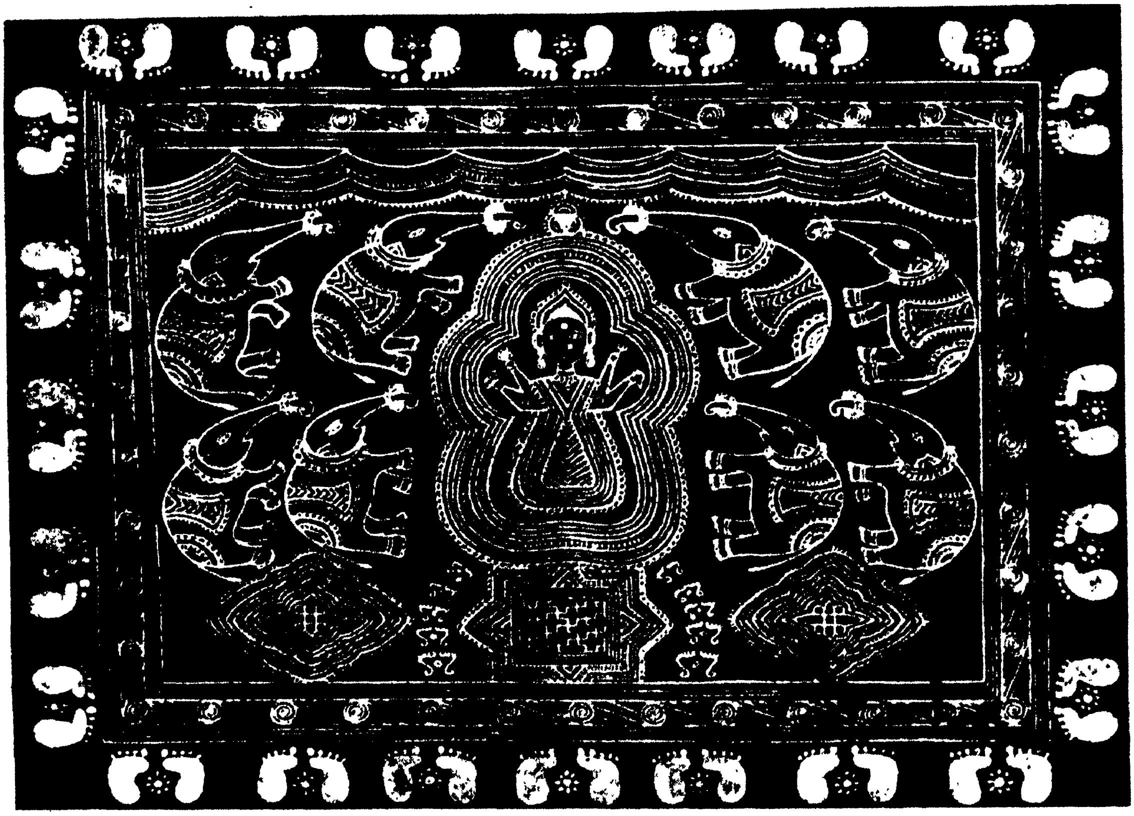

कुमाऊं लोक शैली में बने दो चित्र : लक्ष्मी (ऊपर) तथा अलक्ष्मी (नीचे)। एक तरफ खुशहाली और संपन्नता की प्रतीक लक्ष्मी—दूसरी तरफ बदहाली और गरीबी की प्रतीक अलक्ष्मी। लक्ष्मी के सामने सुंदर रंगोलियां बनी हैं। दोनों तरफ गहनों से सुसज्जित हाथी उसकी पूजा कर रहे हैं। ऊपर तोरण बंधे हैं। अनगिनत पांव उसकी ओर बढ़ रहे हैं। उधर अलक्ष्मी के चित्र में चेहरा तक चित्रित नहीं किया गया है!

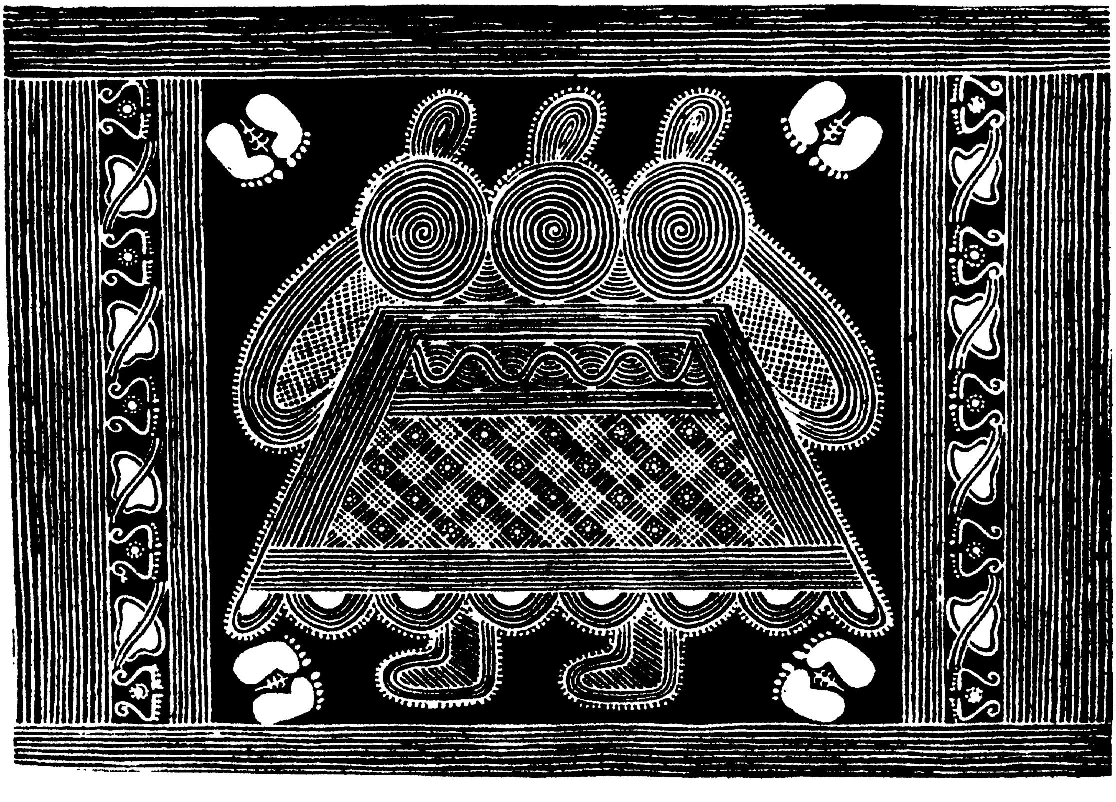

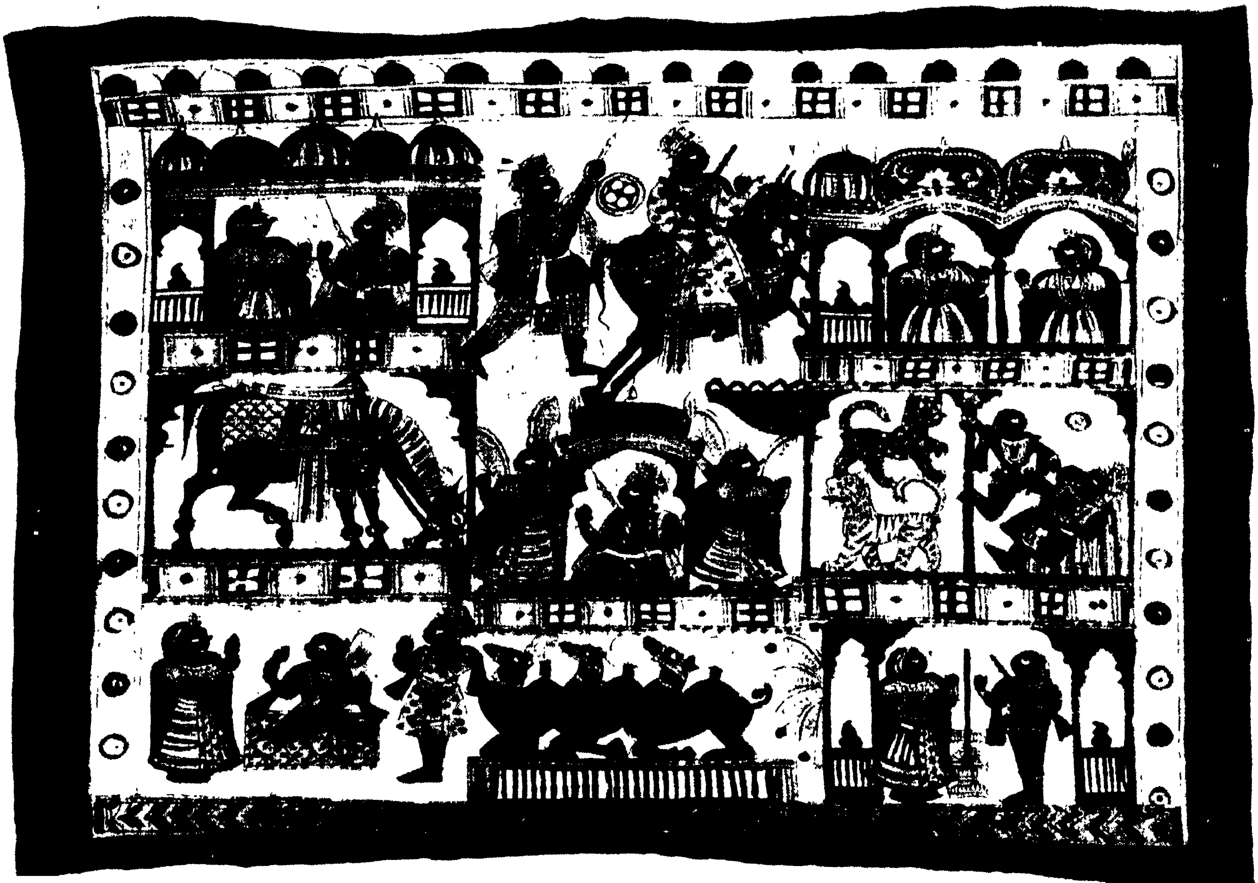

राजस्थान का फड़। लंबे कपड़े पर एक कथा के अलग-अलग दृश्य क्रम से चित्रित किए जाते हैं!

पैठन, महाराष्ट्र के लोककलाकारों द्वारा बनाई गई चित्रकथि। इसमें कृष्ण और उनके साथियों की बाललीलाओं का चित्रण है। अन्य चीज़ों के अलावा पेड़-पौधों तथा तालाब की पृष्ठभूमि को प्रमुखता से चित्रित किया गया है।

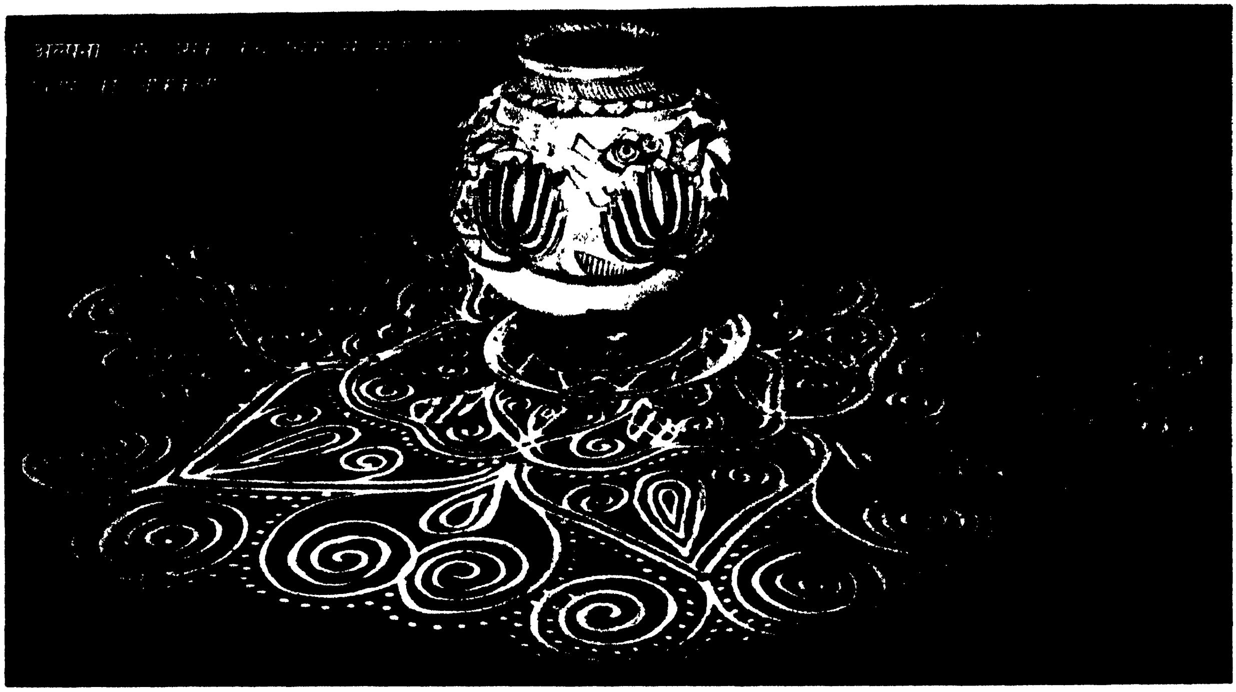

चित्र हों या फिर उत्तर प्रदेश की कुमाऊं शैली के। कुमाऊं की महिलाएं तीज-त्यौहार पर अपने घर के अंदर तथा बाहर की ज़मीन को लीपकर उस पर चित्र बनाती हैं।

मनोरंजन लोककला का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है और चित्रकथा आम लोगों के मनोरंजन का प्रमुख साधन। ग्रामीण जनजीवन में कथा-कहानी कहने सुनने की एक परंपरा रही है! इसमें भी चित्रों का बखूबी उपयोग किया जाता रहा है।

महाराष्ट्र में इसे **चित्रकथि** कहा जाता है तो राजस्थान में **फड़**, और बंगाल में **जादू-पटुआ**। इनमें आमतौर पर रामायण या महाभारत की कहानियां चित्रित की जाती हैं। राजस्थान की फड़ शैली में इनके अलावा राजपूतों की वीर गाथाएं भी बताई जाती हैं।

राजस्थान के चित्रकार इन्हें बनाकर भोप नामक कलाकारों को बेच देते हैं। भोप सजधजकर गांव-गांव घूमते हैं और नाच गाकर चित्र दिखाते हुए कथा सुनाते हैं। चित्रित कपड़ा एक लकड़ी पर लिपटा रहता है और जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उसे घुमाकर फ़िल्म की तरह दिखाया जाता है। वास्तव में इस तरह कहानी सुनाना अपने देश की एक बहुत पुरानी परंपरा है। आज से दो हज़ार साल पहले बने सांची स्तूप में भी इसी हेतु मूर्तिकला का उपयोग किया गया था। पर अब फ़िल्म और टेलीविज़न के प्रसार के कारण ये कलाएं समाप्त होती जा रही हैं। इनके प्रति रूचि कम हो गई है। इनसे जुड़े कलाकार भी अपना पुश्तैनी धंधा छोड़कर दूसरे कामों में लग रहे हैं।

☐ **सी.एन. सुब्रह्मण्यम**

(सभी चित्र : इंडियन फोक आर्ट से साभार)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण :

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : रेक्स डी रोज़ारियो, एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–462 016.

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई, 1991

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

किलाकिला या किंगफिशर
यानी मछली मारने वाला

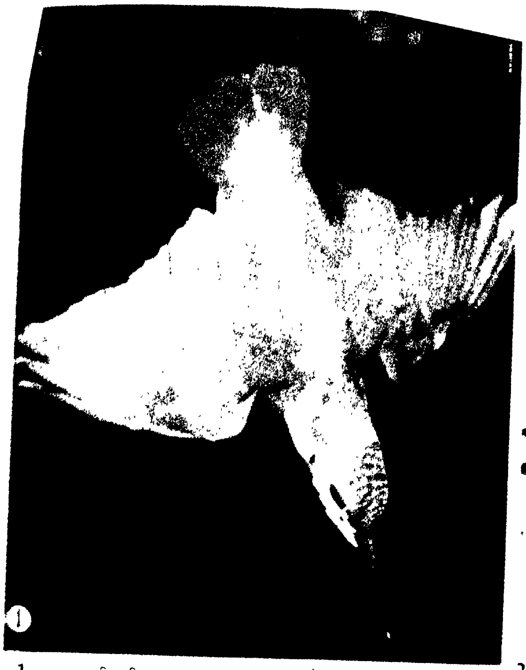

1. **यह** पानी की सतह पर उड़ता रहता है, जब मछली नज़र आती है तो फुर्ती से गोता लगाता है। हर बार मछली हाथ आए.... ज़रूरी नहीं। कई गोते लगाने के बाद एकाध मछली हाथ मे..... नहीं. . चोंच मे आती है।

2. **सत्तर** किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से पानी में गोता लगाता है, अपनी खोपड़ी के बल। खोपड़ी मजबूत होती है, नहीं तो टूट ही जाएगी।

3. **आख़िर** आ ही गई एक मछली.. चोंच मे।

4. **मिल** गया भोजन। अब किसी पेड़ पर बैठकर, मछली को पटक-पटककर मार डालेगा और फिर पूरी की पूरी निगल लेगा।

इन चित्रों को लेने के लिए मछली से भरा एक टैंक उस जगह पर रखा गया जहां किलकिला आमतौर पर आते थे। जब भी वे गोता लगाते, टैंक में लगा ऑटोमैटिक कैमरा फोटो खींच लेता।

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/91

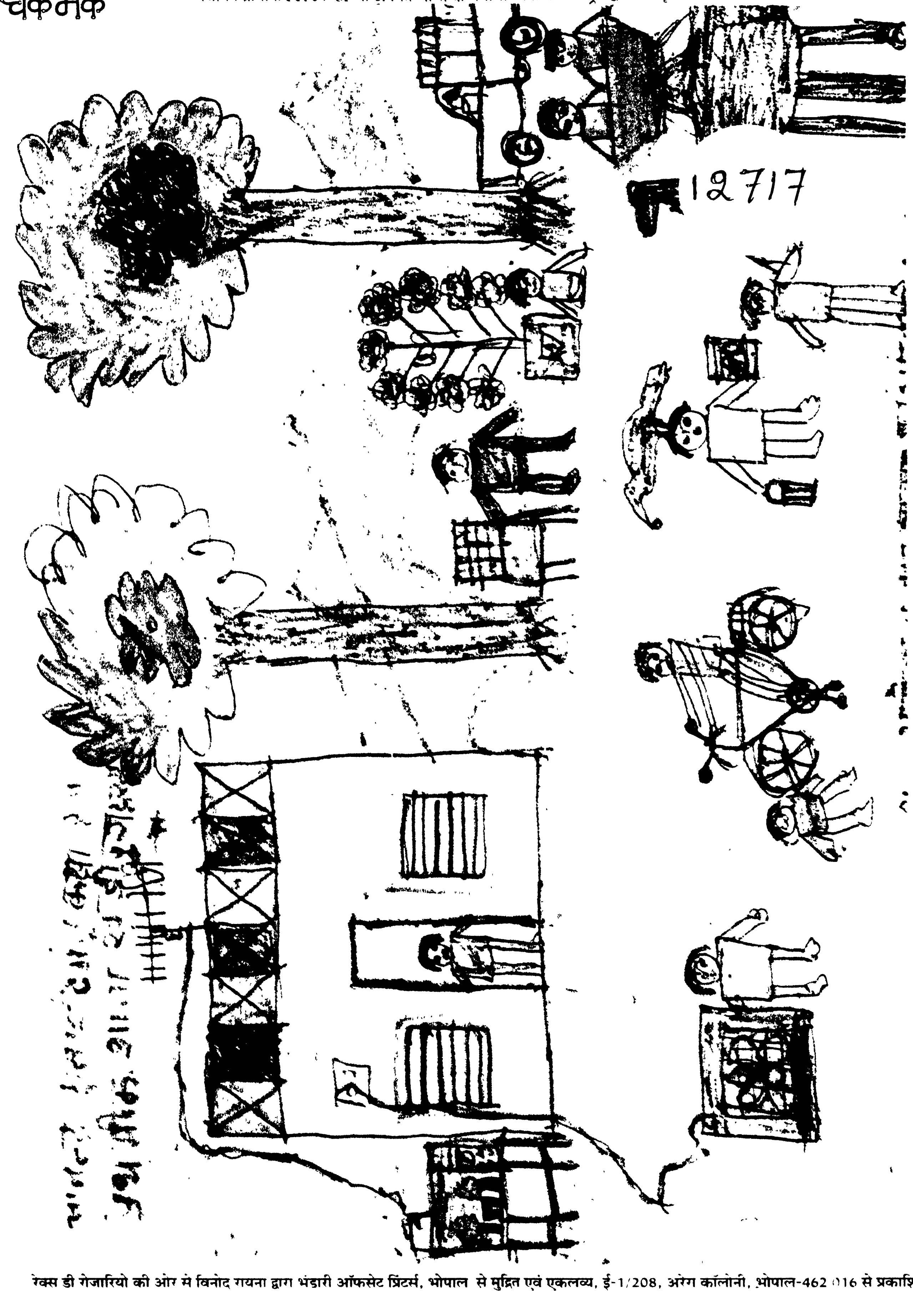

आनंद कुमार रैसन, चौथी, हरदा

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।